शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF
EDUCATION

सत्यमेव जयते

उल्लास
ULLAS
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम

जन जन साक्षर

उल्लास

शिक्षण-अधिगम सामग्री संकलन

جان جان سکشیر

ਜਨ ਤਕ
ਸਾਖਰ

लोक
साक्षर अछि

জন জন

ଜନ ଜନ
ସାକ୍ଷରତା

ஜன் ஜன்
எழுத்தறிவு

সাক্ষৰ

జన జన
సాక్షర

ஜன் ஜன்
சக்ஷர்

लोक साक्षर
आहेत

جان جان سکشیر

जन जन साक्षर

ਜਨ ਤਕ
ਸਾਖਰ

Jan Jan
Saakshar

ஜன் ஜன்
எழுத்தறிவு

जनाः
जनाः
साक्षराः

लोक साक्षर
आहेत

लोक
साक्षर अछि

ஜன் ஜன்
சக்ஷர்

જન જન
સાક્ષર

लोक साक्षर
आसात

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
Minister of Education
Government of India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि 'उल्लास' (समाज में सभी के लिए जीवनपर्यन्त सीखने की समझ) के अंतर्गत शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण-अधिगम सामग्री को एक संकलन के रूप में विकसित किया गया है, जो अब भारत के विविध क्षेत्रों के शिक्षार्थियों एवं स्वयंसेवी शिक्षकों के साथ साझा करने लिए तैयार है। इस संग्रह को तैयार करने में अथक प्रयासों के लिए सभी शिक्षार्थियों, अ-साक्षर और नव-साक्षर, स्वयंसेवी शिक्षकों और 'उल्लास' के सभी योगदानकर्ताओं को मेरी हार्दिक बधाई।

उल्लास जन भागीदारी – लोगों की सहभागिता के सफल मॉडल के रूप में उभरा है, जो 2030 तक पूर्ण साक्षर भारत का मार्ग प्रशस्त करता है। एक विकसित भारत के लिए, एक पूर्ण साक्षर भारत पहली और सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। उल्लास केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह एक जन आंदोलन है जो एक समावेशी और प्रगतिशील भारत की आत्मा को प्रतिबिम्बित करता है।

यह संकलन स्वयंसेवी शिक्षकों और शिक्षार्थियों के लिए एक उदाहरण होगा जो उल्लास के अंतर्गत सीखने को अधिक सहभागी, आनंददायी एवं नवोन्मेषी बनाने में मदद करेगा। इस संकलन में शिक्षार्थी-केंद्रित महत्वपूर्ण जीवन कौशल का अनुकूलन एवं क्षेत्रीय अथवा लोक संस्कृति का स्पर्श निहित है।

यह संकलन पूर्ण साक्षर और सशक्त भारत के निर्माण की हमारी सामूहिक यात्रा में एक मूल्यवान मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.sm@gov.in

ਜਨ ਤਕ
ਸਾਖਰ

جان جان سکشیر

लोक
साक्षर अछि

জন জন

সাক্ষৰ

ଜନ ଜନ
ସାକ୍ଷରତା

ஜன் ஜன்
எழுத்தறிவு

జన జన
సాక్షర

ஜன் ஜன்
சக்ஷர்

लोक साक्षर
आहेत

جان جان سکشیر

जन जन साक्षर

ਜਨ ਤਕ
ਸਾਖਰ

Jan Jan
Saakshar

ஜன் ஜன்
எழுத்தறிவு

जनाः
जनाः
साक्षराः

लोक साक्षर
आहेत

लोक
साक्षर अछि

ஜன் ஜன்
சக்ஷர்

લોક સાક્ષર
આસાત

જન જન
સાક્ષર

जयन्त चौधरी
JAYANT CHAUDHARY

सत्यमेव जयते

कौशल विकास और उद्यमशीलता
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं
शिक्षा राज्य मंत्री
भारत सरकार
Minister of State (Independent Charge) for
Skill Development and Entrepreneurship
and Minister of State for Education
Government of India

संदेश

यह संग्रह बहुभाषी शिक्षण-सामग्री का एक संकलन है। इसका उद्देश्य शिक्षार्थियों के लिए सीखने-सिखाने को अधिक आकर्षक और आसानी से स्वीकार्य बनाना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह संकलन भिन्न-भिन्न शैक्षिक परिस्थितियों में सीखने के अनुभवों को समृद्ध करेगा और 'उल्लास' (समाज में सभी के लिए जीवनपर्यन्त सीखने की समझ) की पूर्ण साक्षरता की इस यात्रा में और अधिक व्यक्तियों को योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा।

जब मैंने 2024 में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के कार्यक्रम में माननीय उपराष्ट्रपति जी की गरिमामयी उपस्थिति में विज्ञान भवन, नई दिल्ली में पहली बार भाग लिया, तो नव-साक्षरों की प्रसन्नता, स्वयंसेवी शिक्षकों के अथक प्रयास और सहयोग, शिक्षार्थियों की प्रेरणादायक कहानियों और प्रदर्शन की शक्ति ने मुझे 'उल्लास' के तहत एक स्वयंसेवक के रूप में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

'उल्लास' एक अनूठा अवसर प्रदान करता है; उस मौन किंतु अदम्य इच्छा को पूरा करने का, जिसे हममें से कई लोग अपने भीतर संजोए रहते हैं – समाज को सार्थक रूप से कुछ लौटाने की इच्छा का। स्वयंसेवक-आधारित एक विशाल आंदोलन के रूप में 'उल्लास' जन-भागीदारी की सच्ची भावना का प्रतिनिधित्व करता है। यह जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को, अर्थात साक्षर भारत के पूर्व-विद्यार्थियों को, 2030 तक पूर्ण साक्षर भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में योगदान देने और स्वयंसेवक बनने के लिए प्रोत्साहित करता है। साक्षरता सशक्त जीवन की ओर पहला कदम है। अनुमान है कि शिक्षा का एक वर्ष सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 0.37% की वृद्धि करता है। जब भारत स्वतंत्रता के सौ वर्ष पूरे करेगा, तब तक साक्षरता देश के हर कोने तक पहुँच जानी चाहिए।

मैं शिक्षण-अधिगम सामग्री के इस जीवंत संग्रह के विकास से जुड़े सभी व्यक्तियों को बधाई देता हूँ। इस कार्य को संभव बनाने वाले सभी योगदानकर्ताओं, शिक्षकों और शिक्षार्थियों के प्रति मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

जयन्त चौधरी

(जयन्त चौधरी)

ᱡᱚᱱ ᱛᱚᱠ
ᱥᱟᱠᱷᱚᱨ

लोक
साक्षर अछि

জন জন

جان جان سکشیر

সাক্ষৰ

ଜନ ଜନ
ସାକ୍ଷରତା

ஜன் ஜன்
எழுத்தறிவு

జన జన
సాక్షర

ஜன் ஜன்
சக்ஷர்

लोक साक्षर
आहेत

جان جان سکشیر

जन जन साक्षर

ᱡᱚᱱ ᱛᱚᱠ
ᱥᱟᱠᱷᱚᱨ

Jan Jan
Saakshar

ஜன் ஜன்
எழுத்தறிவு

जनाः
जनाः
साक्षराः

लोक साक्षर
आहेत

लोक
साक्षर अछि

ஜன் ஜன்
சக்ஷர்

લોક સાક્ષર
આસાત

જન જન
સાક્ષર

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार
Department of School Education & Literacy
Ministry of Education
Government of India

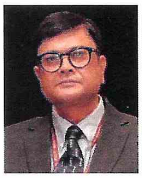

संदेश

उल्लास (समाज में सभी के लिए जीवनपर्यन्त सीखने की समझ) अब तक 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के 28,291,696 पंजीकृत शिक्षार्थियों तक पहुँच चुका है, जो किसी न किसी अपरिहार्य कारणवश औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। इन शिक्षार्थियों को साक्षरता और सीखने के अवसर उपलब्ध कराने के लिए 4,473,233 पंजीकृत स्वयंसेवक सक्रिय रूप से उल्लास में भाग ले रहे हैं।

विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों से शिक्षार्थियों और स्वयंसेवकों को एक मंच पर लाने, आपसी सीखने-सिखाने को बढ़ावा देने और श्रेष्ठ प्रथाओं के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से वर्ष 2024-25 में हरियाणा, मध्य प्रदेश, असम और तेलंगाना में चार क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किए गए। प्रत्येक सम्मेलन में सीखने-सीखने की शिक्षार्थी केंद्रित सामग्री की परिकल्पना करने, विकसित करने और प्रस्तुत करने में शिक्षार्थियों और स्वयंसेवकों के समूहों को सक्षम बनाया गया, ताकि साक्षरता को एक जीवन पर्यंत, समावेशी और सामुदायिक प्रयास के रूप में आगे बढ़ाया जा सके।

यह संग्रह श्रेष्ठ प्रथाओं, गतिविधि-आधारित शिक्षण विधियों, स्थानीय नवाचारों और विशेष संदर्भों के अनुकूल उपकरणों को बहुभाषी दृष्टिकोण से संगृहीत करता है। यह न केवल साक्षरता प्राप्त करने में सहयोग करता है, बल्कि शिक्षार्थियों को डिजिटल, वित्तीय और कानूनी साक्षरता से सार्थक रूप से जुड़ने के लिए प्रेरित करता है। यह संग्रह शिक्षार्थियों, नव-साक्षरों और स्वयंसेवी शिक्षकों के अनुभवों से प्रेरित एक सहयोगात्मक प्रयास का परिणाम है।

मुझे विश्वास है कि यह सतत उपलब्धि अन्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को समावेशी और समान साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अपने प्रयासों को और तेज करने के लिए प्रेरित करेगी। यह संग्रह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की व्यापक दृष्टि को दर्शाता है, जो जीवन के प्रत्येक चरण में शिक्षा को समग्र और समावेशी दृष्टिकोण से बढ़ावा देती है।

'समग्र शिक्षा अभियान' जहाँ 'प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा' (ECCE) से लेकर कक्षा 12 तक विद्यालयी शिक्षा को सुदृढ़ करता है और सार्वभौमिक पहुँच, समानता और गुणवत्ता सुनिश्चित करता है; वहीं 'उल्लास' उन प्रौढ़ शिक्षार्थियों को सशक्त बनाता है जो औपचारिक शिक्षा से वंचित रह गए थे, उन्हें आधारभूत साक्षरता, जीवन कौशलों और डिजिटल दक्षताओं से युक्त करता है। इस प्रकार 'उल्लास' कार्यक्रम 'समग्र शिक्षा अभियान' के पूरक के रूप में कार्य करता है।

इस पहल में योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों की मैं हृदय से सराहना व्यक्त करता हूँ। मैं कामना करता हूँ कि यह संग्रह और अधिक शिक्षार्थियों और स्वयंसेवकों को नवोन्मेषी दृष्टिकोणों और नए उत्साह के साथ उल्लास मिशन को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करे, ताकि हम पूर्ण साक्षर भारत के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

(संजय कुमार)

124 'सी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
124 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110001
Telephone: +91-11-23382587, +91-11-23381104 Fax : +91-11-23387589
E-mail: secy.sel@nic.in

جان جان سکشیر

ਜਨਤਕ ਸਾਖਰ

लोक साक्षर अछि

জন জন

ଜନ ଜନ ସାକ୍ଷରତା

ஜன் ஜன் எழுத்தறிவு

সাক্ষৰ

జన జన సాక్షర

ஜன் ஜன் சக்ஷர்

लोक साक्षर आहेत

جان جان سکشیر

जन जन साक्षर

ਜਨਤਕ ਸਾਖਰ

Jan Jan Saakshar

ஜன் ஜன் எழுத்தறிவு

जनाः जनाः साक्षराः

लोक साक्षर आहेत

लोक साक्षर अछि

ஜன் ஜன் சக்ஷர்

लोक साक्षर आसात

જન જન સાક્ષર

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह स्थापित करती है कि बुनियादी साक्षरता प्राप्त करना, शिक्षा प्राप्त करना और जीविकोपार्जन का अवसर प्रत्येक नागरिक मौलिक अधिकार है। यह नीति इस तथ्य पर बल देती है कि साक्षरता और बुनियादी शिक्षा; व्यक्तिगत विकास, नागरिक सहभागिता, आर्थिक प्रगति और जीवनपर्यंत को प्रोत्साहित करने में परिवर्तनकारी क्षमता रखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह भी दर्शाती है कि साक्षरता दर और प्रति व्यक्ति आय (GDP) के बीच घनिष्ठ संबंध है और यह स्वीकार करती है कि अ-साक्षर व्यक्तियों को दैनिक जीवन में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि वित्तीय लेन-देन, रोज़गार के अवसर, डिजिटल साक्षरता, अधिकारों की जानकारी और उत्पादक क्षेत्रों तक पहुँच आदि में।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक समग्र पाठ्यचर्या रूपरेखा के माध्यम से प्रौढ़ शिक्षा के लिए नवाचारपूर्ण दृष्टिकोणों को प्रोत्साहित करती है। इस रूपरेखा में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान, महत्वपूर्ण जीवन कौशल, व्यावसायिक कौशल विकास, बुनियादी शिक्षा और सतत शिक्षा जैसे घटक सम्मिलित हैं। इस रूपरेखा को वयस्क शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। यह स्थानीय रोजगार की प्रासंगिकता, भिन्न-भिन्न शिक्षण पद्धतियों और वयस्क शिक्षार्थियों के लिए उपयुक्त सामग्री पर बल देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वयस्क शिक्षा और जीवनपर्यंत अधिगम के महत्व को रेखांकित करते हुए करते हुए कहती है कि *" प्रौढ़ शिक्षा के लिए सुदृढ़ एवं नवाचारी सरकारी पहलकदमियों, खासकर समुदाय की भागीदारी को सुगम बनाना तथा प्रौद्योगिकी के सुचारू और लाभकारी एकीकरण को जल्द से जल्द लागू किया जाएगा ताकि 100% साक्षरता के सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति शीघ्र हो सके।"* (अनुच्छेद 21.4)

इस भावना के अंतर्गत, भारतीय परिप्रेक्ष्य में साक्षरता को इस प्रकार परिभाषित किया गया है -

"समझ के साथ पढ़ने, लिखने और गणना करने की क्षमता; पहचानने, समझने, व्याख्या करने और सृजन करने की योग्यता; साथ ही डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता आदि जैसे जीवनोपयोगी महत्त्वपूर्ण कौशल।"

शिक्षा मंत्रालय ने अप्रैल 2022 में *उल्लास* – नवभारत साक्षरता कार्यक्रम का शुभारंभ किया। यह भारत सरकार की एक पहल है, जिसका उद्देश्य है उन सभी अ-साक्षर नागरिकों के लिए समावेशी, न्यायसंगत और जीवनपर्यंत अधिगम के अवसर प्रदान करना जो औपचारिक शिक्षा से वंचित रह गए। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि और सतत विकास लक्ष्य 4 (SDG 4.6) के अनुरूप है। उल्लास का लक्ष्य है कि 2030 तक हर अ-साक्षर व्यक्ति को बुनियादी साक्षरता, संख्या ज्ञान और जीवनोपयोगी कौशलों से सशक्त किया जाए।

यह योजना पूरे देश में अ-साक्षर युवाओं और वयस्कों को लचीले और सुलभ रूप से सीखने के मार्गों के माध्यम से सहयोग प्रदान करती है। शिक्षार्थियों की विविधता को ध्यान में रखते हुए, यह कार्यक्रम ऑनलाइन और ऑफलाइन विधियों का संयोजित (हाइब्रिड) तरीका अपनाता है और स्वयंसेवा की भावना के माध्यम से समुदाय की भागीदारी को बढ़ावा देता है। *'उल्लास'* का उद्देश्य शिक्षार्थियों को आवश्यक महत्वपूर्ण जीवन कौशलों से लैस करना है, जिसमें वित्तीय साक्षरता (जैसे बचत करना, बैंक खाता खोलना, बजट बनाना आदि), डिजिटल साक्षरता (जैसे ऑनलाइन बैंकिंग और डिजिटल भुगतान) और सहायक सेवाओं और सुविधाओं तक पहुँच प्राप्त करना शामिल है।

इस योजना की एक अन्य विशेषता है *'उल्लास पोर्टल'* और *'उल्लास मोबाइल ऐप'*, जिसका उपयोग शिक्षार्थियों और स्वयंसेवी शिक्षकों के पंजीकरण तथा सीखने-सिखाने की सामग्री उपलब्ध कराने के लिए किया जाता है। इनमें

एनसीईआरटी द्वारा विकसित 26 भाषाओं और 117 स्थानीय भाषाओं में प्रवेशिकाएँ (प्राइमर्स) उपलब्ध हैं। अब तक 2.83 करोड़ से अधिक शिक्षार्थी और 44 लाख से अधिक स्वयंसेवी शिक्षक 'उल्लास ऐप' से पंजीकृत हो चुके हैं।

शिक्षार्थियों की प्रगति को *बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता* आकलन परीक्षा *(FLNAT)* के माध्यम से ट्रैक और प्रमाणित किया जा रहा है जो वर्ष में दो बार आयोजित की जाती है। मार्च 2025 तक 33 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के 1.72 करोड़ से अधिक शिक्षार्थी इस परीक्षा में सम्मिलित हो चुके हैं।

शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षण-अधिगम सामग्री *उल्लास* की सफलता का प्रमुख आधार है। ये संसाधन शिक्षार्थियों को सक्रिय रूप से जोड़ने और देशभर के स्वयंसेवी शिक्षकों को उनकी मातृभाषा में सहयोग प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत 'उल्लास संकलन' इन्हीं सामग्रियों का एक सुसंपादित संग्रह है, जिसे विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के शिक्षार्थियों व स्वयंसेवी शिक्षकों द्वारा चार क्षेत्रीय सम्मेलनों के दौरान विकसित किया गया। यह संकलन भारत की भाषायी, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता का प्रतिबिंब है।

हमें विश्वास है कि यह संकलन शिक्षार्थियों, स्वयंसेवी शिक्षकों, राज्य अधिकारियों और अन्य सभी हितधारकों के लिए एक मूल्यवान और उपयोगी संसाधन सिद्ध होगा।

अर्चना शर्मा अवस्थी
संयुक्त सचिव, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

अनुक्रमणिका

भूमिका 1

बुनियादी साक्षरता 2

- गतिविधि 1: चलो शब्दों से खेलें 3
- गतिविधि 2: चलो मिलकर पढ़ें 6
- गतिविधि 3: वर्णवृक्ष 9
- गतिविधि 4: मिलान वाले अक्षर कार्ड 12
- गतिविधि 5: शब्दों की दुनिया 15
- गतिविधि 6: शब्द चुनो और उठाओ 18
- गतिविधि 7: घूमाओ और सीखो 22
- गतिविधि 8: खुशी-खुशी पढ़ें 25
- गतिविधि 9: अक्षरों और संख्याओं के साथ खेल 28
- गतिविधि 10: घूमता पहिया 31

बुनियादी संख्यात्मकता 34

- गतिविधि 11: रंगों से खेलें 35
- गतिविधि 12. अंकों से मस्ती 38
- गतिविधि 13: नंबर खेल 41
- गतिविधि 14: पहले और बाद में 44
- गतिविधि 15: नंबर स्ट्रिप 47
- गतिविधि 16: गिनती करके सीखें 50
- गतिविधि 17: पासा और अंक 53
- गतिविधि 18: गणित का जादू 56
- गतिविधि 19: अंक मस्ती 59
- गतिविधि 20. सही समय क्या है? 62

परिशिष्ट 1: मूलभूत साक्षरता – सीखने के प्रतिफल 66

परिशिष्ट 2: मूलभूत गणना – सीखने के प्रतिफल 67

جان جان سکشیر

ਜਨ ਤਕ
ਸਾਖਰ

लोक
साक्षर अछि

জন জন

সাক্ষৰ

ଜନ ଜନ
ସାକ୍ଷରତା

ஜன் ஜன்
எழுத்தறிவு

జన జన
సాక్షర

ஜன் ஜன்
சக்ஷர்

लोक साक्षर
आहेत

جان جان سکشیر

जन जन साक्षर

ਜਨ ਤਕ
ਸਾਖਰ

Jan Jan
Saakshar

ஜன் ஜன்
எழுத்தறிவு

जनाः
जनाः
साक्षराः

लोक साक्षर
आहेत

लोक
साक्षर अछि

ஜன் ஜன்
சக்ஷர்

લોક સાક્ષર
आसात

જન જન
સાક્ષર

भूमिका

उल्लास – सभी के लिए आजीवन शिक्षा की समझ एक सफल जन-भागीदारी मॉडल के रूप में उभरा है, जो वर्ष 2030 तक पूर्ण साक्षर भारत की दिशा में मार्ग प्रशस्त करता है। इसका उद्देश्य है 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के प्रत्येक अ -साक्षर नागरिक तक पहुँचना; चाहे उसकी शारीरिक या सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति कैसी भी हो, और स्वैच्छिक योगदान के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को आपसी सहमति एवं सुविधाजनक ढंग से संपन्न करना। यह पहल एक नागरिक के रूप में जिम्मेदारियों के साझा निर्वहन की सर्वोच्च प्रतिबद्धता और शक्ति को प्रदर्शित करती है।

6 फरवरी 2024 को आयोजित उल्लास मेला में माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान जी ने ज़मीन से शुरुआत करने (Bottom-up Approach) पर बल दिया, जिसमें सीखने-सिखाने की उस विधि को प्राथमिकता दी जाए जिसे शिक्षार्थी अपनाना चाहे। उन्होंने स्पष्ट कहा – *''उल्लास के बिना कोई गति नहीं है।'' विकसित भारत के लिए पूर्ण साक्षर भारत ही सबसे पहली और मज़बूत नींव है। उल्लास मात्र एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि जन-आंदोलन है, जो समावेशी और प्रगतिशील भारत की आत्मा को प्रतिबिंबित करता है।''*

माननीय शिक्षा मंत्री के मार्गदर्शन में वर्ष 2024-25 के दौरान, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग द्वारा राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र, एनसीईआरटी के सहयोग से हरियाणा, मध्यप्रदेश, असम और तेलंगाना में चार क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किए गए।

इन सम्मेलनों का प्रतिफल है - **'उल्लास शिक्षण-अधिगम सामग्री संकलन'**। यह भारत के साक्षरता आंदोलन के केंद्र में स्थित शिक्षार्थियों, नवसाक्षरों, स्वयंसेवी शिक्षकों और शिक्षाविदों की रचनात्मकता और सहभागिता को दर्शाता है। इन सम्मेलनों ने शिक्षार्थियों, नवसाक्षरों, स्वयंसेवी शिक्षकों, एससीईआरटी अधिकारियों और राज्य साक्षरता मिशनों के प्रतिनिधियों को संवाद, आदान-प्रदान और नवाचार का जीवंत मंच प्रदान किया।

सम्मेलनों ने मुख्यतः तीन उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित किया -

1. शिक्षार्थियों, नवसाक्षरों, स्वयंसेवी शिक्षकों तथा राज्य, जिला, ब्लॉक और ग्राम पंचायत स्तर के हितधारकों की आवश्यकताओं को समझना, ताकि देश में उल्लास को सुदृढ़ बनाया जा सके।
2. हितधारकों के लिए क्षेत्रीय/स्थानीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री का विकास करना।
3. उल्लास को सशक्त बनाने हेतु क्रियान्वयन रणनीति में सुझावों और श्रेष्ठ प्रथाओं को सम्मिलित करना।

यह संकलन उन रचनात्मक और प्रभावशाली शिक्षण-अधिगम सामग्रियों (TLMs) को एकत्रित करता है, जो इन सम्मेलनों के दौरान विकसित की गईं। यह संकलन दर्शाता है कि सार्थक साक्षरता तब ही फलती-फूलती है जब उसका जुड़ाव जीवन की रोज़मर्रा की परिस्थितियों से हो, जैसे घर का बजट बनाना, स्वास्थ्य प्रबंधन, डिजिटल सेवाओं तक पहुँच या यातायात के साधन आदि।

यह संकलन मात्र एक संकलन नहीं है बल्कि यह दस्तावेज़ इससे आगे बढ़कर भारत की साक्षरता यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। यह बदलाव का संकेत देता है कि साक्षरता को केवल संख्यात्मक लक्ष्य न मानकर, उसे एक परिवर्तनकारी यात्रा के रूप में समझा जाए जो आत्मविश्वास, स्वतंत्रता और जीवनपर्यंत शिक्षा को पोषित करती है।

समुदाय-आधारित इन नवाचारों का दस्तावेज़ीकरण करके यह संकलन पूरे देश में स्वयंसेवी शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा बनता है। यह *'जन-जन साक्षर'* की भावना को साकार करता है — एक साझा राष्ट्रीय दृष्टि, जिसमें प्रत्येक नागरिक के पास वह कौशल हो जिससे वह भागीदारी कर सके, योगदान दे सके और एक समावेशी एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहयोग कर सके।

बुनियादी

साक्षरता

गतिविधि 1 : चलो शब्दों से खेलें

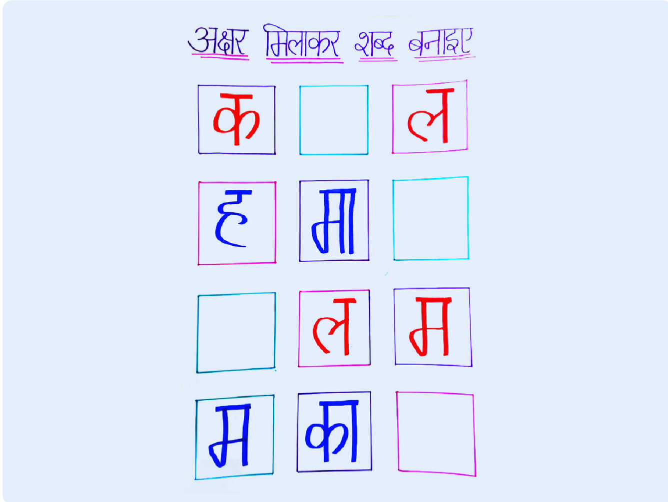

छत्तीसगढ़ द्वारा तैयार की गई शिक्षण-अधिगम-सामग्री
तृतीय क्षेत्रीय सम्मेलन – 12–13 सितंबर 2024, भोपाल

उद्देश्य

- विभिन्न अक्षरों से शब्द बनाकर शब्दावली विकसित करना

आवश्यक सामग्री

- गत्ता / कार्डबोर्ड/ ट्रे
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर/पेंसिल
- स्केल
- कटर/कैंची
- सेलोफेन शीट

बनाने की विधि

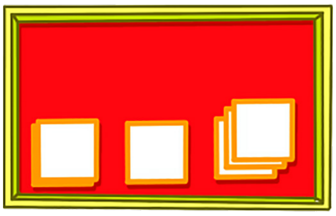

चित्र 1

चरण 1

- एक गत्ते की शीट लें और उसे 2×2 या 4×4 इंच के वर्गाकार आकार में काटें (चित्र 1 के अनुसार)।
- उसी आकार का चार्ट पेपर काटकर गत्ते पर चिपकाएँ।
- फ्लैश कार्ड तैयार करें।

चित्र 2

चरण 2

- फ्लैश कार्ड पर सभी अक्षर (वर्णमाला) लिखें, जैसे – क, ल, म, आ, अ आदि (चित्र 2)।

चित्र 3

चरण 3

- फ्लैश कार्ड को टिकाऊ बनाने के लिए सेलोफेन शीट से ढक दें (चित्र 3)।

उपयोग की विधि

1. गतिविधि का प्रारम्भ करते हुए स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों को बताएँगे कि आज हम फ्लैश कार्ड का प्रयोग करके सार्थक शब्द बनाएँगे।

- स्वयंसेवी शिक्षक अक्षरों वाले फ्लैश कार्ड चुनकर उन्हें क्रम में सजाएँगे और एक सरल शब्द बनाएँगे। उदाहरण के लिए – 'क', 'ल' और 'म' मिलाकर कलम।

2. स्वयंसेवी शिक्षक ऐसे और शब्द बनाएँगे और उन्हें पढ़ने में शिक्षार्थियों की मदद करेंगे। कोशिश होगी कि शब्द शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन से जुड़े हों।
3. कठिनाई स्तर बढ़ाते हुए स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों से लंबे शब्द बनाने को कहेंगे और उन्हें पढ़ने-लिखने में सहायता देंगे। उदाहरण – मलमल, साइकिल, खटमल आदि।

4. स्वयंसेवी शिक्षक भाषा विशेष के स्वर/मात्राओं का उपयोग भी करेंगे, जैसे हिंदी में – आ (ा), इ (ि), उ (ु) आदि।
5. शिक्षार्थी पहले दो-अक्षर वाले शब्द बनाएँगे, फिर सहयोग से तीन-अक्षरी और उससे बड़े शब्द बनाएँगे। उदाहरण – रात, तीर, तारा, कमरा (चित्र 4)।

चित्र 4

शिक्षार्थी ने सीखा

- अक्षरों की पहचान करना – अकेले और शब्द के भीतर। (LO 1 – साक्षरता)
- अक्षर, शब्द, छोटा पाठ साफ-सुथरी लिखावट में लिखना। (LO 8 – साक्षरता)
- अक्षर से पूरे पाठ और पूरे पाठ से अक्षर तक पढ़ने-लिखने की दो-तरफ़ा प्रक्रिया में भागीदारी।
- (LO 4 – साक्षरता)
- सहारे के साथ और धीरे-धीरे स्वतन्त्र रूप से पाठ पढ़ना। (LO 12 – साक्षरता)

गतिविधि 2 : चलो मिलकर पढ़ें

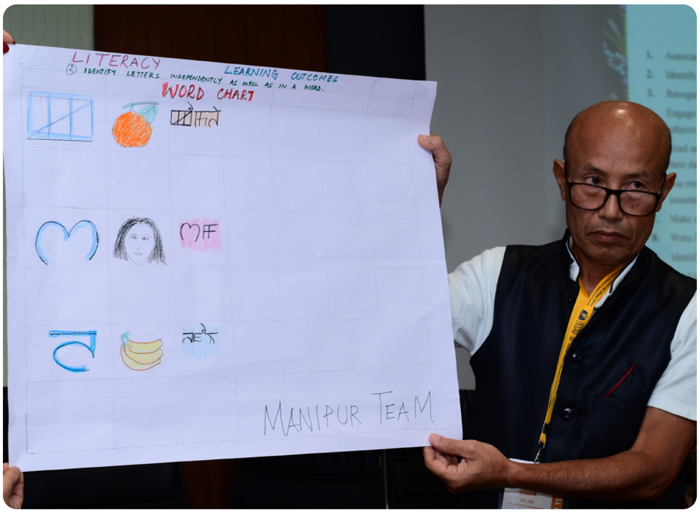

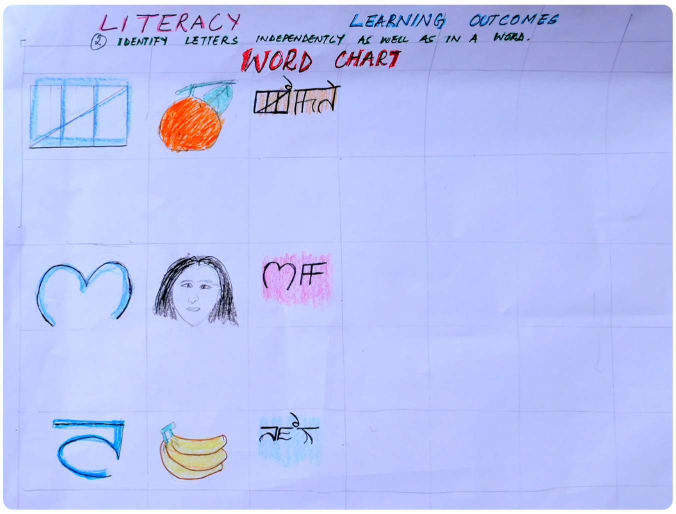

मणिपुर द्वारा तैयार की गई शिक्षण-अधिगम-सामग्री
तृतीय क्षेत्रीय सम्मेलन – 22–23 अक्टूबर 2024, गुवाहाटी

उद्देश्य

- अक्षरों की पहचान कराना
- अक्षर और ध्वनि के बीच संबंध बनाना

आवश्यक सामग्री

- गत्ता / कार्डबोर्ड शीट, चार्ट पेपर
- मार्कर/रंगीन पेन/ पेंसिल
- पैमाना (स्केल)
- कैंची/कटर
- फेविकोल/सेलो टेप

बनाने की विधि

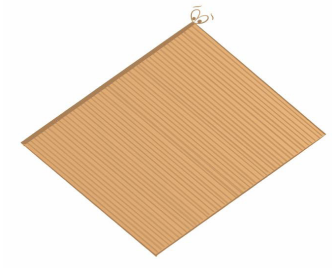

चित्र 1

चरण 1

- चित्र 1 के अनुसार चार्ट पेपर के आकार की गत्ते की शीट लें।

चित्र 2

चरण 2

- इस पर चार्ट पेपर चिपकाएँ (चित्र 2)

चित्र 3

चरण 3

- तीन कॉलम बनाएँ। पहले कॉलम में अक्षर लिखें, दूसरे कॉलम में उनसे संबंधित चित्र बनाएँ/चिपकाएँ। उदाहरण – अक्षर ब के साथ बस का चित्र, अक्षर प के साथ पतंग का चित्र (चित्र 3)।

चित्र 4

चरण 4

1. तीसरे कॉलम में प्रयोग किए गए चित्रों के नाम वाले शब्द लिखें। उदाहरण – म – मछली, स – सूरज (चित्र 4)।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों से चर्चा की शुरुआत करेंगे कि उन्हें चित्र/तस्वीर की मदद से शब्द पहचानने हैं, जैसे – आम, पतंग आदि।
2. स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों से कहेंगे कि वे शब्दों के प्रारंभिक अक्षर को पहचानें।
3. जब वे चित्र देखें, तो उनका ध्यान प्रारंभिक अक्षर और उसके नाम वाले शब्द पर केंद्रित करें, जैसे – 'स' सूरज के लिए है, और साथ ही उसका चित्र भी दिखाएँ।
4. उन्हें अगला नाम वाला शब्द पढ़ने के लिए प्रेरित करें और अँगुली रखकर उसका चित्र दिखाएँ।
5. स्वयंसेवी शिक्षक कठिनाई स्तर बढ़ाने के लिए ध्वनि-आधारित गतिविधियों को जोड़ सकते हैं, जैसे प्रारंभिक अक्षर को शब्द के बीच या अंत में रखना – 'सूरज' (जहाँ 'स' शुरुआत में है), 'कसम' (बीच में 'स'), 'बस' (अंत में 'स')।
6. स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों को कुछ शब्द पहचानने में मदद कर सकते हैं, जैसे – "लकड़ी", "कलम", "मछली" – 'ल' के लिए।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अक्षर के आकार और ध्वनि का संबंध समझना। (LO 2 – साक्षरता)
- अक्षर से पूरे पाठ और पूरे पाठ से अक्षर तक, दोनों स्तरों पर पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में सहभागिता। (LO 4 – साक्षरता)
- शब्द पढ़ने के कई तरीकों का प्रयोग – अक्षर-ध्वनि विश्लेषण, पूरे शब्द की पहचान, चित्र या संदर्भ के आधार पर अनुमान। (LO 6 – साक्षरता)
- अक्षरों की पहचान – अकेले और शब्द में। (LO 1 – साक्षरता

गतिविधि 3 : वर्णवृक्ष

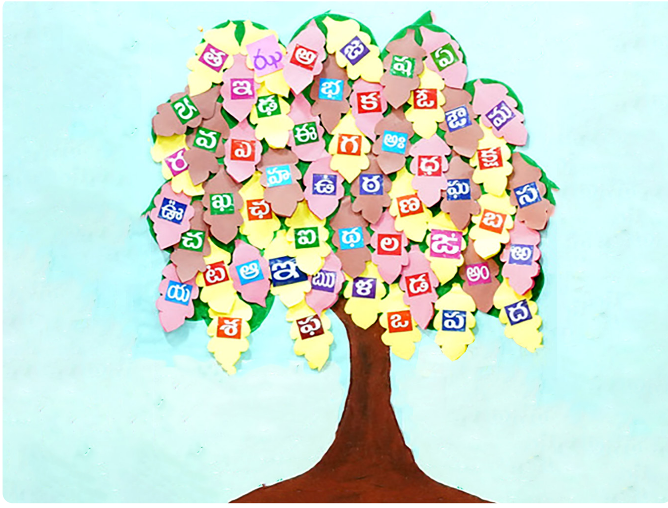

आंध्र प्रदेश द्वारा तैयार की गई शिक्षण-अधिगम-सामग्री
चतुर्थ क्षेत्रीय सम्मेलन – 17–18 फरवरी 2025, हैदराबाद

उद्देश्य

- वर्तनी कौशल और शब्द बनाने की क्षमता विकसित करना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता (कार्डबोर्ड)
- चार्ट पेपर (सफेद/हल्के रंग का)
- मार्कर पेन/पेंसिल
- पैमाना (स्केल)
- कटर/कैंची
- सेलोफेन शीट
- सेलो टेप/फेविकोल

बनाने की विधि

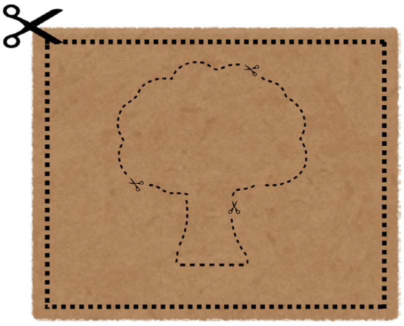

चित्र 1

चरण 1

- गत्ते की शीट लें और उसे पेड़ के आकार में काटें (चित्र 1 के अनुसार)।

चित्र 2

चरण 2

- इस पर रंगीन शीट चिपकाएँ (चित्र 2)।

चित्र 3

चरण 3

- पत्तियों के आकार के कागज़ काटें और उन्हें पेड़ पर चिपकाएँ।
- इन पत्तियों पर ऐसे अक्षर लिखें जिनसे वे शब्द बनाए जा सकें जो शिक्षार्थियों ने पहले देखे/सुने हों (चित्र 3)।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक गतिविधि की शुरुआत करते हुए बताएँगे कि शिक्षार्थियों को पत्तियों पर लिखे अक्षरों को पहचानकर सार्थक शब्द बनाने हैं।
2. स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों को पत्तियों पर लिखे अक्षरों की पहचान करने में मदद करेंगे।
3. स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों को इन अक्षरों से सार्थक शब्द खोजने के लिए प्रेरित करेंगे, जैसे –
   - అమ్మ (माँ)
   - ఇటుక (ईंट)
   - ఉంగరం (अँगूठी)
   - కుటుంబం (परिवार)
   - ఇరుగు పొరుగు (पड़ोसी)
   - పండుగ (त्योहार)
   - शिक्षार्थियों के अपने परिवार के सदस्यों के नाम
   - ఆవు (गाय)
   - భోజనం (भोजन) आदि।

   साथ ही इन शब्दों को लिखने का अभ्यास भी कराएँगे।
4. कार्य पूरा करने के बाद, स्वयंसेवी शिक्षक कठिनाई स्तर बढ़ाकर उनसे इन शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाने को कह सकते हैं। उदाहरण – నాకు చిన్న కుటుంబం ఉంది (मेरा छोटा परिवार है)।
5. सामूहिक रूप से वे तुकांत शब्द ढूँढ़ सकते हैं और उन्हें जोड़कर मज़ेदार शब्द-जोड़े बना सकते हैं जैसे – लटक – मटक, जल – नल।

चित्र 4

चित्र 5

शिक्षार्थी ने सीखा

- अकेले अक्षर को और शब्द के भीतर अक्षर की पहचान करना। (LO 1 – साक्षरता)
- अक्षर, शब्द, छोटा पाठ पठनीय लिखाई में लिखना। (LO 8 – साक्षरता)
- भाषा/पाठ में प्रयुक्त सामान्य शब्दों की पहचान करना। (LO 9 – साक्षरता)

गतिविधि 4 : : मिलान वाले अक्षर कार्ड

पुदुच्चेरी द्वारा चतुर्थ क्षेत्रीय सम्मेलन, हैदराबाद
तेलंगाना – 17-18 फरवरी 2025 में तैयार

उद्देश्य

- अक्षरों की पहचान करना
- अक्षर और शब्द के संबंध को समझना

आवश्यक सामग्री

- गत्ता
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल/रंगीन पेन
- कटर/कैंची
- सेलोफेन शीट (प्लास्टिक)
- फेविकोल

बनाने की विधि

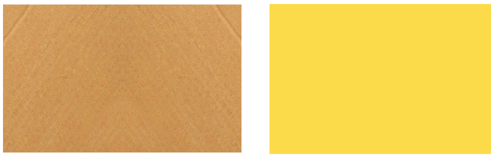

चित्र 1

चरण 1

- गत्ता लें और उस पर चार्ट पेपर चिपकाएँ (चित्र 1)।

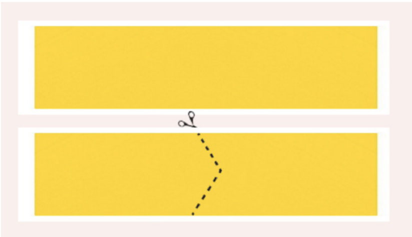

चित्र 2

चरण 2

- सभी आकारों को चित्र 2 में दिखाए अनुसार क्रमबद्ध रूप से बनाएँ।

चित्र 3

चरण 3

- स्वयंसेवी शिक्षक एक सार्थक शब्दों की सूची तैयार करेंगे। अक्षर एक हिस्से में और पूरे शब्द को दूसरे हिस्से में लिखें (चित्र 3)।

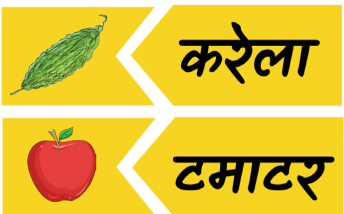

चित्र 4

चरण 4

- प्रत्येक अक्षर के पीछे संबंधित चित्र चिपकाएँ (चित्र 4)।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों को बताएँगे कि उन्हें दिखाए गए अक्षर और लिखे हुए शब्द के बीच संबंध स्थापित करना है।
2. शिक्षक एक हाथ में अक्षर पकड़ेंगे और शिक्षार्थी से कहेंगे कि वह उस अक्षर से शुरू होने वाला शब्द चुने और आकार को पूरा करे (चित्र 5)।

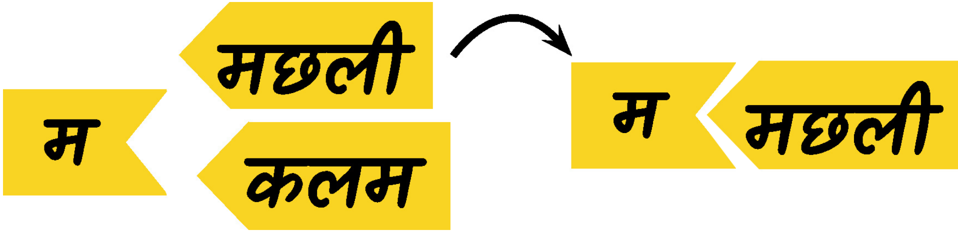

चित्र 5

3. शिक्षार्थी पहले अक्षर की पहचान करेंगे।
4. फिर वे उसका सार्थक शब्द पहचानकर आकार को पूरा करेंगे।
5. यदि शिक्षार्थी को शब्द पहचानने में कठिनाई हो, तो अक्षर के पीछे का चित्र संकेत के रूप में दिखाया जा सकता है या उससे संबंधित प्रश्न पूछे जा सकते हैं।
6. कठिनाई स्तर बढ़ाने के लिए अधिक अक्षरों वाले शब्द भी शामिल किए जा सकते हैं।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अकेले अक्षर और शब्द में अक्षर की पहचान करना। (LO 1 – साक्षरता)
- अक्षर से पूरे पाठ और पूरे पाठ से अक्षर तक पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में भागीदारी करना। (LO 4 – साक्षरता)
- अलग-अलग दैनिक जीवन के संदर्भों से पढ़ने-लिखने का अभ्यास करना। (LO 5 – साक्षरता)
- शब्द पढ़ने के एक से अधिक तरीकों का प्रयोग करना – अक्षर-ध्वनि विश्लेषण, पूरे शब्द की पहचान, चित्र या संदर्भ के आधार पर अनुमान। (LO 6 – साक्षरता)

गतिविधि 5 : शब्दों की दुनिया

मध्य प्रदेश द्वारा तैयार की गई शिक्षण-अधिगम-सामग्री
द्वितीय क्षेत्रीय सम्मेलन, भोपाल, 12–13 सितंबर 2024

उद्देश्य

- शब्द कैलेंडर के माध्यम से पठन कौशल को विकसित करना।
- शब्दावली को बढ़ाना।

आवश्यक सामग्री

- पुराना टेबल कैलेंडर
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल
- पैमाना (स्केल)
- कटर/कैंची
- सेलो टेप/फेविकोल

बनाने की विधि

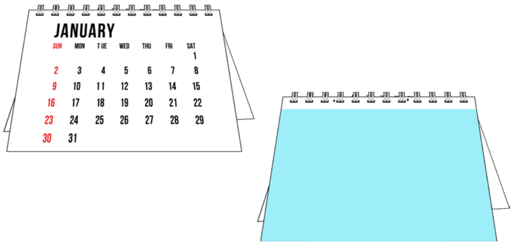

चित्र 1

चरण 1

- एक पुराने टेबल कैलेंडर के पन्नों पर रंगीन कागज़ चिपकाएँ (चित्र 1)।

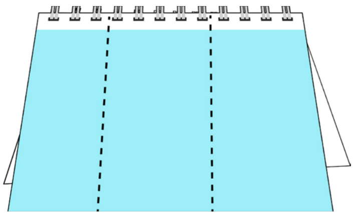

चित्र 2

चरण 2

- प्रत्येक माह के पन्ने को तीन समान हिस्सों में काटें/विभाजित करें (चित्र 2)।

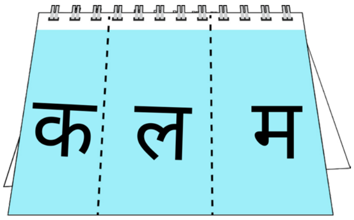

चित्र 3

चरण 3

- पन्नों के प्रत्येक हिस्से पर यादृच्छिक (रैंडम) तरीके से अक्षर लिखें ताकि इन हिस्सों को पलटकर शब्द बनाए जा सकें (चित्र 3)।

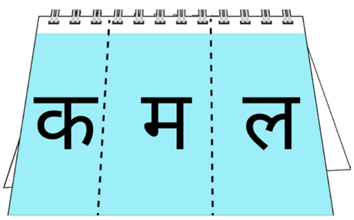

चित्र 4

चरण 4

- उदाहरण – पहले हिस्से पर 'क', दूसरे पर 'ल', और तीसरे पर 'म' लिखा हो, तो उन्हें पलटने पर कलम बनेगा। यदि दूसरा और तीसरा हिस्सा बदलकर 'म' की जगह 'ल' रख दें, तो नया शब्द कमल बनेगा (चित्र 4)।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक यह बताते हुए गतिविधि शुरू करेंगे कि कैलेंडर के पृष्ठों के हिस्सों को पलटकर कैसे शब्द बनाए जा सकते हैं।
2. शिक्षार्थियों को अक्षरों को मिलाकर शब्द बनाने के लिए प्रेरित करें।
3. उनका ध्यान इस तथ्य पर लाएँ कि केवल एक अक्षर बदलने से नया सार्थक शब्द बन जाता है।
4. यह गतिविधि शिक्षार्थियों को उच्चारण समझने और तुकांत शब्दों से परिचित कराने का अच्छा तरीका है।
5. शिक्षक पन्नों को पलटकर समान अक्षरों वाले शब्द बनाने पर ध्यान केंद्रित करवा सकते हैं।
6. इस गतिविधि का विस्तार करते हुए तुकांत शब्द खोजने और उनके पहले अक्षर लिखकर नए शब्द बनाने को कहा जा सकता है – जैसे हम, कम, दम।
7. शिक्षार्थियों को अलग-अलग अक्षर संयोजनों से और शब्द बनाने के लिए प्रेरित करें और उनकी सूची तैयार करवाएँ – जैसे वन, मन, धन, रमन, चमन।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अकेले अक्षर और शब्द में अक्षर की पहचान करना। (LO 1 – भाषा)
- किसी विशेष अक्षर या ध्वनि से शुरू/समाप्त होने वाले शब्दों की सूची बनाना। (LO 7 – भाषा)
- अक्षर, शब्द, छोटा पाठ साफ-सुथरी लिखावट में लिखना। (LO 8 – भाषा)
- भाषा/पाठ में प्रयुक्त सामान्य शब्दों की पहचान करना। (LO 9 – भाषा)

गतिविधि 6 : शब्द चुनो और उठाओ

आंध्र प्रदेश द्वारा चतुर्थ क्षेत्रीय सम्मेलन, हैदराबाद
तेलंगाना – 17-18 फरवरी 2025 में तैयार)

उद्देश्य

- शब्द पहचान और वर्तनी में सुधार करना।
- वाक्य निर्माण में सहायता करना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता (कार्डबोर्ड)
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल/रंगीन पेन
- पैमाना (स्केल)
- कटर/कैंची
- सेलो टेप/फेविकोल/फेविस्टिक
- डंडी (स्टिक)
- धागा/सुतली (थ्रेड/स्ट्रिंग)
- चुंबक (मैग्नेट)

बनाने की विधि

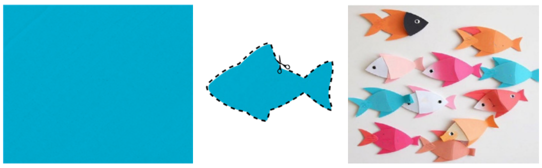

चित्र 1

चरण 1

- गत्ते और चार्ट पेपर को मछली जैसी आकृतियों में काटें (चित्र 1)।
- दोनों को आपस में चिपकाएँ।
- प्रत्येक मछली पर एक शब्द लिखें।
- मछली के पीछे चुंबक का टुकड़ा चिपकाएँ।

चित्र 2

चरण 2

- चार्ट पेपर लेकर उसे तालाब के आकार (अंडाकार) में काटें और रंग भरें (चित्र 2)।
- कुछ कंकड़ और पौधे बनाकर/चिपकाकर तालाब जैसे परिवेश को बनाने का प्रयास करें।

चित्र 3

चरण 3

- पहले से तैयार शब्द लिखी मछलियों को तालाब में बिखेर दें (चित्र 3)।
- एक डंडी/छोटी छड़ी के सिरे पर धागे से चुंबक बाँध दें।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक खेल का परिचय देते हुए बताएँगे कि यह "शब्द पकड़ने" का खेल है, जिसमें मछली पकड़ने वाली बंसी/डंडी से तालाब से शब्द उठाने हैं।
2. तालाब में कई मछलियाँ (शब्द) हैं और उद्देश्य है सही तरीके से शब्द पहचानकर पढ़ना।
3. शिक्षार्थियों को सार्थक शब्द चुनकर जोर से पढ़ने के लिए प्रेरित करें।
4. खेल का तरीका स्पष्ट करने के लिए स्वयंसेवी शिक्षक उदाहरण देंगे – जैसे मछली पकड़ने वाली डंडी से तालाब से कलम शब्द वाली मछली उठाकर पढ़ना।
5. तालब में से किसी शब्द-मछली को उठाने के बाद शिक्षार्थियों से उसकी वर्तनी बोलने, लिखने और उस शब्द से वाक्य बनाने के लिए भी कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि शब्द 'पेड़' है, तो वाक्य हो सकता है – "पेड़ पर बहुत से आम लगे हैं।"
6. जैसा कि चित्र 4 में दिखाया गया है, इस गतिविधि में शिक्षार्थियों की मातृभाषा के शब्द भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

चित्र 4

7. एक शब्द बोलें (जैसे "छाता", "किताब" या "आलू) और प्रत्येक शिक्षार्थी को उस शब्द वाली मछली को तालाब में से उठाने का अवसर दें।
8. सुनिश्चित करें कि शिक्षार्थी तालाब में से मछली को उठाते हुए उस शब्द का उच्चारण अवश्य करें।
9. यदि शिक्षार्थी को कठिनाई हो, तो उसे संकेत दें, जैसे – "यह वह चीज़ है जिसे आप किताब में पढ़ते हैं" या "क्या यह आपको किसी परिचित शब्द जैसा लग रहा है?" उन्हें उस शब्द के अक्षरों को पहचानने के लिए प्रेरित करें।
10. शब्द को वास्तविक जीवन से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करें। उदाहरण के लिए, यदि शिक्षार्थी ने शब्द 'रुपए' उठाया है, तो पूछें – "20 रुपये का नमक खरीदने के लिए 5 रुपये के कितने सिक्के चाहिए?"

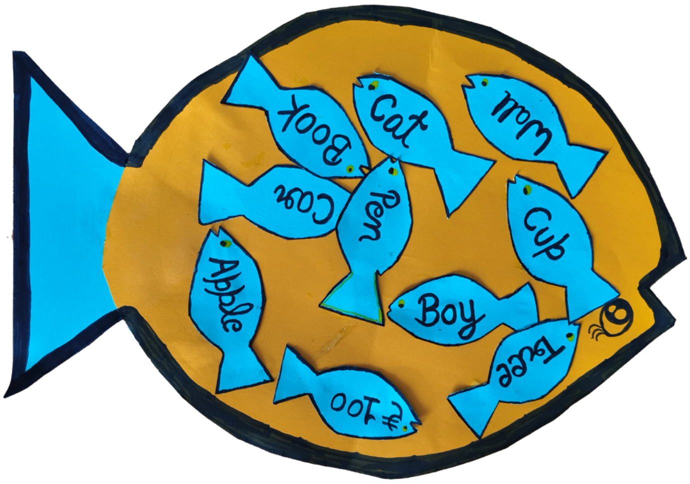

चित्र 5

शिक्षार्थी ने सीखा

- शब्द पढ़ने के एक से अधिक तरीकों का प्रयोग करना – अक्षर-ध्वनि विश्लेषण, पूरे शब्द की पहचान, चित्र/संदर्भ के आधार पर अनुमान। (LO 6 – साक्षरता)
- अक्षर, शब्द, छोटा पाठ साफ-सुथरी लिखावट में लिखना। (LO 8 – साक्षरता)
- भाषा/पाठ में प्रयुक्त सामान्य शब्दों की पहचान करना। (LO 9 – साक्षरता)
- किसी विषय/पाठ के इर्द-गिर्द बातचीत कर गहराई से समझ विकसित करना। (LO 14 – साक्षरता)

गतिविधि 7 : घुमाओ और सीखो

राजस्थान द्वारा प्रथम क्षेत्रीय सम्मेलन
गुरुग्राम, हरियाणा – 1-2 अगस्त 2024 में तैयार

उद्देश्य

- अक्षरों को पहचानना और पढ़ना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता (कार्डबोर्ड)
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- कटर/कैंची
- सेलोफेन शीट
- चूड़ी/थाली/प्लेट (गोल आकार बनाने के लिए)
- सेलो टेप/फेविकोल/फेविस्टिक
- आइसक्रीम स्टिक
- बोतल के ढक्कन
- सफेद स्टिकर (हर ढक्कन के लिए एक)
- मार्कर पेन

बनाने की विधि

चरण 1

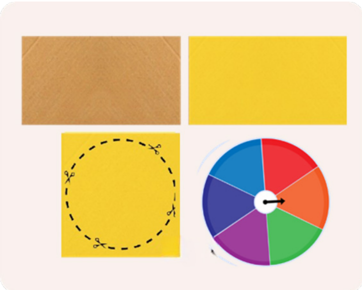

चित्र 1

- गत्ते पर चार्ट पेपर चिपकाएँ और उसे वृत्त के आकार में काटें।
- वृत्ताकार भाग को छह भागों में बाँटें।
- वृत्त के बीच में पतली आइसक्रीम स्टिक रखें और उसे पिन/फिजेट स्पिनर से जोड़ें (चित्र 1)।

चरण 2

चित्र 2

- बोतलों के 6 ढक्कन लें और उन पर चिपकाने के लिए स्टिकर तैयार करें।
- ऐसे सार्थक शब्दों की सूची तैयार करें जिन्हें आप सिखाना चाहते हैं।
- शिक्षण हेतु सार्थक शब्दों की सूची बनाकर, स्टिकर पर अक्षर लिखें, जैसे – फ, ग, ल, ट, न, म (चित्र 2)।

चरण 3

- बोतलों के 6 ढक्कनों को चार्ट के छह हिस्सों में चिपकाएँ (चित्र 3(i) और 3(ii))।

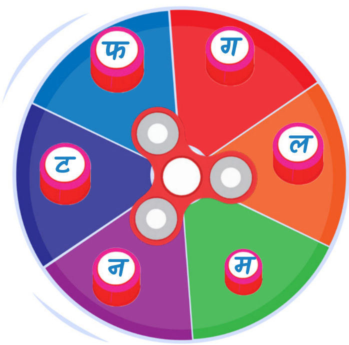

चित्र 3 (i)

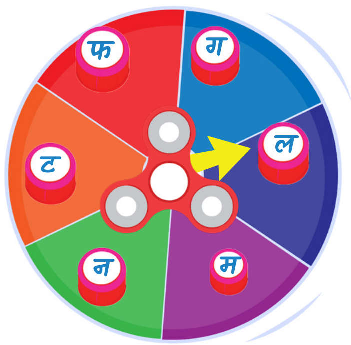

चित्र 3 (ii)

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक गतिविधि को प्रारंभ करते हुए शिक्षार्थियों को बताएँगे कि उन्हें ढक्कन पर लिखे अक्षर (जैसे फ, ग, ल, ट, न, म आदि) से शुरू होने वाले सार्थक शब्द बनाने हैं।
2. शिक्षार्थियों को दो टीमों "A" और "B" में बाँट दें।
3. टीम A से एक शिक्षार्थी को पहिया घुमाने के लिए आमंत्रित करें। एक शिक्षार्थी आएगा और पहिया घुमाएगा। मान लें पहिया 'ल' अक्षर पर रुकता है)जैसा कि चित्र 3(ii) में दर्शाया गया है), तो टीम B को उस अक्षर से शुरू होने वाले शब्द बताने होंगे, जैसे – लालटेन, लीची, लाल, लटकना आदि।
4. फिर टीम B का खिलाड़ी पहिया घुमाएगा और टीम A उसी तरह शब्द बताएगी।
5. यदि शिक्षार्थी को सही उत्तर देने में कुछ कठिनाई हो, तो स्वयंसेवी शिक्षक कोई संकेत दे सकते हैं – जैसे "तुम्हारी सहेली का नाम इस अक्षर से शुरू होता है (लक्ष्मी)" या "यह एक रंग का नाम है (लाल)"।
6. इस गतिविधि को और रोचक बनाने के लिए शिक्षक उस शब्द का पर्यायवाची पूछ सकते हैं, जैसे – पानी : जल, सूर्य : सूरज।
7. उत्साह बढ़ाने के लिए शिक्षार्थियों से कहें कि उस शब्द से वाक्य बनाएं, जैसे – "बच्चे पेड़ से लटक रहे हैं।" या "लालटेन जलाते ही उजाला हो जाता है।"
8. ढक्कनों पर अक्षरों की जगह संख्याएँ भी लगाई जा सकती हैं और उनसे संबंधित प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जैसे –
    - 46, 446, 444 में 4 कितनी बार आता है?
    - ऐसे दस अंक बताओ जिनमें 6 आता है।
9. संख्याओं वाले ढक्कनों से अंकों को जोड़ने-घटाने के प्रश्न भी पूछे और लिखवाए जा सकते हैं।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अकेले अक्षर और शब्द में अक्षर की पहचान करना। (LO 1 – साक्षरता)
- अक्षर से पूरे पाठ और पूरे पाठ से अक्षर तक पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में भागीदारी करना। (LO 4 – साक्षरता)
- अपने परिवेश में उपलब्ध मुद्रित पाठ को पढ़ना और उसे अपने जीवन अनुभवों व परिस्थितियों से जोड़ना। (LO 10 – साक्षरता)

गतिविधि 8 : खुशी-खुशी पढ़ें

हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रथम क्षेत्रीय सम्मेलन, गुरुग्राम
हरियाणा – 1-2 अगस्त 2024 में तैयार

उद्देश्य

- चित्र पठन के माध्यम से पठन कौशल को विकसित और सुगम बनाना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ते की शीट
- चार्ट पेपर/रंगीन शीट
- मार्कर पेन/पेंसिल
- पैमाना (स्केल)
- कटर/कैंची
- सेलो टेप/फेविकोल

बनाने की विधि

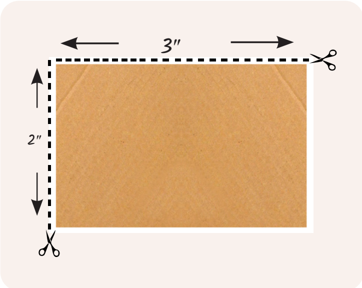

चित्र 1

चरण 1

- गत्ते की शीट लें और उसे 3″ × 2″ के आकार में काटें (चित्र 1)।

चित्र 2

चरण 2

- इस पर चार्ट पेपर/रंगीन शीट चिपकाएँ (चित्र 2)।

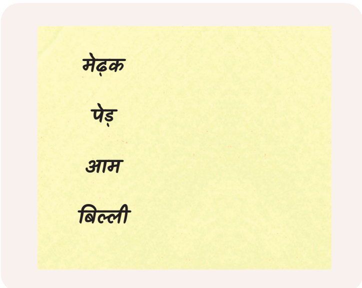

चित्र 3

चरण 3

- (नोट – इस चरण से पहले शिक्षार्थियों को मात्राओं का प्रयोग करके शब्द बनाना सिखाया जाना चाहिए।)
- शीट के बाएँ हिस्से में मेंढक, पेड़, आम, बिल्ली जैसे शब्द लिखें (चित्र 3)।

चित्र 4

चरण 4

- बाएँ हिस्से में लिखे गए शब्दों के अनुरूप चित्र बनाएं या चिपकाएँ (चित्र 4)।

उपयोग की विधि

1. गतिविधि का प्रारंभ करते हुए स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों को बताएँगे - आप इस गतिविधि में अक्षरों को पहचानने और परिचित शब्दों को पढ़ने का प्रयास करेंगे। इस काम में आपको चित्रों/तस्वीरों से मदद मिलेगी।
2. स्वयंसेवी शिक्षक पहले तैयार चार्ट को दिखाएँगे ताकि शिक्षार्थी उसे देख सकें और समझ सकें।
3. शिक्षार्थियों से बारी-बारी से शब्द पढ़ने को कहें। यदि शब्द पढ़ने में उन्हें कठिनाई हो तो चित्र पर ध्यान केंद्रित कराकर पढ़ने में उनकी सहायता करें।
4. जब शिक्षार्थी शब्द स्वतन्त्र रूप से पढ़ने लगें, तो उनसे कुछ तुकांत शब्द सोचने को कहें, जैसे – लाल, जाल, काल, हाल, पाल।
5. शिक्षार्थियों से कहें कि कमरे में मौजूद वस्तुओं की सूची बनाएं और उन्हें बोर्ड पर लिखने का प्रयास करें। फिर उनसे उन वस्तुओं के नाम शब्दों में बनाने को कहें – जैसे अलमारी, कुर्सी, मेज, पंखा, दरवाज़ा।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अक्षर से पूरे पाठ और पूरे पाठ से अक्षर तक पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में भागीदारी करना। (LO 4 – साक्षरता)
- शब्द पढ़ने के एक से अधिक तरीकों का प्रयोग करना – अक्षर-ध्वनि विश्लेषण, पूरे शब्द की पहचान, चित्र या संदर्भ के आधार पर अनुमान। (LO 6 – साक्षरता)
- अक्षर, शब्द, छोटा पाठ साफ-सुथरी लिखावट में लिखना। (LO 8 – साक्षरता)
- सामान्य वस्तुओं के चित्रों को प्रारंभिक भाषा या अपनी भाषा में नाम देना। (LO 11 – साक्षरता)
- सहारे के साथ और धीरे-धीरे स्वतन्त्र रूप से पाठ पढ़ना। (LO 12 – साक्षरता)

गतिविधि 9 : अक्षरों और संख्याओं के साथ खेल

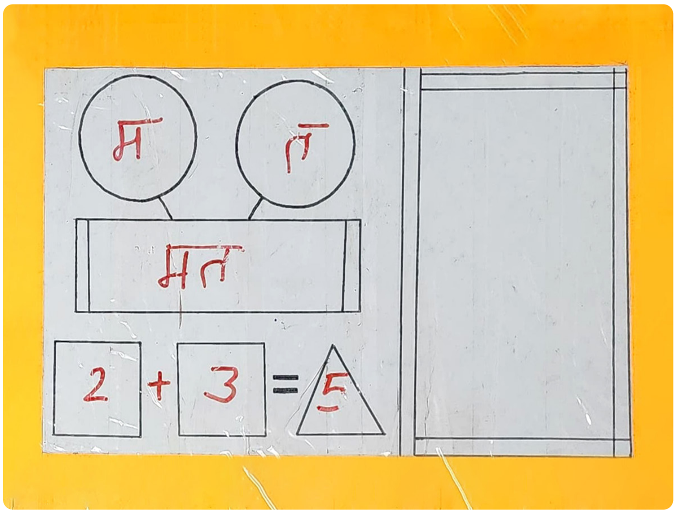

राजस्थान द्वारा प्रथम क्षेत्रीय सम्मेलन
गुरुग्राम, हरियाणा – 1-2 अगस्त 2024 में तैयार

उद्देश्य

- अक्षरों की पहचान करना।
- अक्षरों की मदद से सार्थक शब्द बनाना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ते की शीट
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- कटर/कैंची
- सेलोफेन शीट
- चूड़ी/थाली/प्लेट (गोल आकार बनाने के लिए)
- सेलो टेप/फेविकोल/फेविस्टिक
- मार्कर/पेन

बनाने की विधि

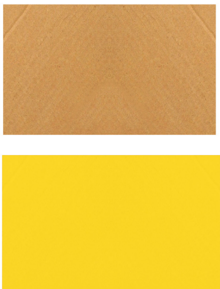

चित्र 1

चरण 1

- गत्ते की शीट लें, उस पर चार्ट पेपर चिपकाएँ और वर्गाकार आकार में काटें (चित्र 1)।

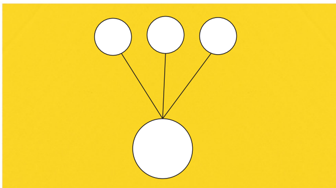

चित्र 2

चरण 2

- उस पर चार वृत्त बनाएं और वृत्तों को तीरों से जोड़ें (चित्र 2)।

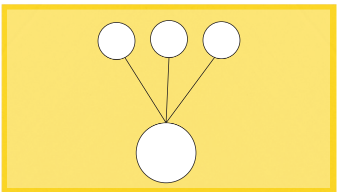

चित्र 3

चरण 3

- गत्ते को सेलोफेन शीट से ढक दें (चित्र 3)।

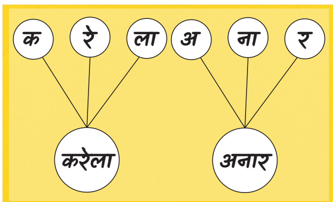

चित्र 4

चरण 4

- सार्थक शब्दों की सूची बनाएं – जैसे करेला, अनार, सड़क।
- सूची में से एक शब्द चुनें और उसके कुछ अक्षर ही गोलों में लिखें (चित्र 4)।
- शिक्षार्थियों को दिए गए अक्षरों की मदद से पूरा शब्द बनाने को कहें।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक यह बताते हुए गतिविधि की शुरुआत करेंगे - हम वृत्तों में लिखे अक्षरों की मदद से सार्थक शब्द बनाएंगे।
2. स्वयंसेवी शिक्षक सार्थक शब्दों की सूची पहले से तैयार करेंकर लें, जैसे करेला, अनार, सड़क, फसल, बारह आदि.
3. पहले शिक्षार्थियों से गोलों में लिखे अक्षर पहचानने को कहें, फिर उनसे पूरा शब्द बनाने और उसे लिखने के लिए कहें।

4. उन्हें और अक्षरों की पहचान कर नए सार्थक शब्द बनाने और उनसे वाक्य बनाने के लिए प्रेरित करें।
5. इस गतिविधि का प्रयोग विभिन्न गणितीय क्रियाओं को सिखाने के लिए भी किया जा सकता है (चित्र 5)।

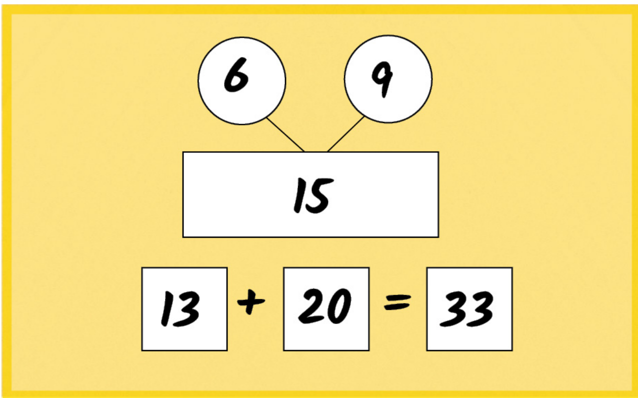

चित्र 5

शिक्षार्थी ने सीखा

- अकेले अक्षर और शब्द में अक्षर की पहचान करना। (LO 1 – साक्षरता)
- अक्षर से पूरे पाठ और पूरे पाठ से अक्षर तक पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में भागीदारी करना। (LO 4 – साक्षरता)
- शब्द पढ़ने के एक से अधिक तरीकों का प्रयोग करना – अक्षर-ध्वनि विश्लेषण, पूरे शब्द की पहचान, चित्र या संदर्भ के आधार पर अनुमान। (LO 6 – साक्षरता)
- किसी विशेष अक्षर या ध्वनि से शुरू/समाप्त होने वाले शब्दों की सूची बनाना। (LO 7 – साक्षरता)
- अक्षर, शब्द, छोटा पाठ साफ-सुथरी लिखावट में लिखना। (LO 8 – साक्षरता)

गतिविधि 10 : घूमता पहिया

झारखंड द्वारा तृतीय क्षेत्रीय सम्मेलन
गुवाहाटी, असम – 22-23 अक्टूबर 2024 में तैयार

उद्देश्य

- अक्षरों की पहचान करना।
- अक्षर और शब्द के संबंध को समझना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता (कार्डबोर्ड)
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल
- कटर/कैंची
- सेलोफेन शीट
- फेविकोल
- थम्ब पिन / फिजेट स्पिनर

बनाने की विधि

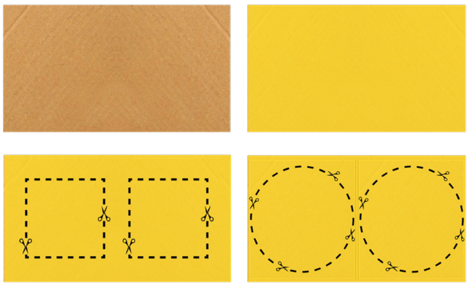

चित्र 1

चरण 1

- गत्ते पर चार्ट पेपर चिपकाएँ (चित्र 1)।
- फिर गत्ते से दो एक समान वृत्त और दो वर्ग (चौकोर आकार) काटें (चित्र 2)।

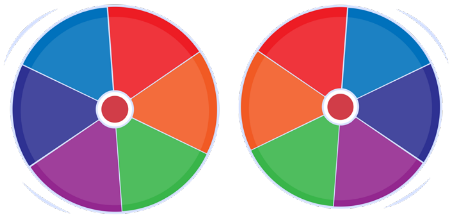

चित्र 2

चरण 2

- दोनों गोलों को छह-छह भागों में बाँटें (चित्र 3)।

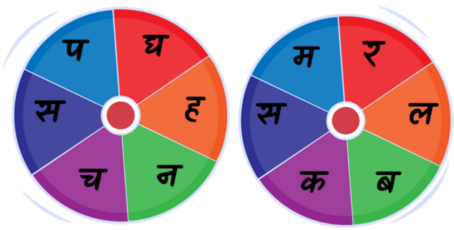

चित्र 3

चरण 3

- दोनों पहियों के प्रत्येक भाग में अलग-अलग अक्षर लिखें ताकि घर, हर, नल, सब जैसे सार्थक शब्द बनाए जा सकें (चित्र 4 और 5)। अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द भी उपयोग किए जा सकते हैं ताकि अपेक्षित परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

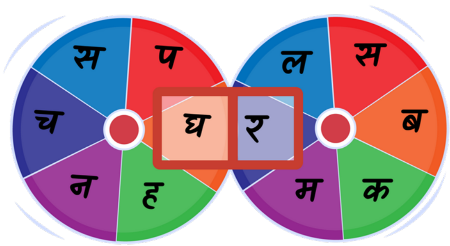

चित्र 4

चरण 4

- दोनों पहियों को इस तरह जोड़ें कि घुमाकर अक्षरों को मिलाकर सार्थक शब्द बनाए जा सकें (चित्र 6)।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक इस गतिविधि का परिचय प्रदर्शन के माध्यम से देंगे।
2. शिक्षार्थियों को दो टीमों में बाँटें।
3. पहली टीम का एक शिक्षार्थी पहला पहिया घुमाएगा।
4. दूसरी टीम का शिक्षार्थी अक्षर पहचानकर दूसरा पहिया घुमाएगा ताकि एक जाना-पहचाना शब्द बन सके।
5. यदि कठिनाई हो, तो स्वयंसेवी शिक्षक अक्षर से संबंधित संकेत देंगे – जैसे "हम वहाँ रहते हैं" (घर) या "हम उससे खेत जोतते हैं" (हल)।
6. सही उत्तर पर पाँच अंक दिए जाएँगे ताकि शिक्षार्थियों में भागीदारी का उत्साह बढ़े।
7. गतिविधि को विस्तार देने के लिए शिक्षक कह सकते हैं कि बने हुए शब्द से वाक्य बनाओ।
8. शिक्षार्थियों को अपनी मातृभाषा में भी शब्द और वाक्य बनाने का अवसर दें तथा बने हुए शब्दों पर चर्चा कर अनुभव साझा करने को कहें।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अकेले अक्षर और शब्द में अक्षर की पहचान करना। (LO 1 – साक्षरता)
- किसी विशेष अक्षर या ध्वनि से शुरू/समाप्त होने वाले शब्दों की सूची बनाना। (LO 7 – साक्षरता)
- भाषा/पाठ में प्रयुक्त सामान्य शब्दों की पहचान करना। (LO 9 – साक्षरता)
- किसी विषय/पाठ के इर्द-गिर्द बातचीत कर गहराई से समझ विकसित करना। (LO 14 – साक्षरता)

बुनियादी

संख्यात्मकता

गतिविधि 11 : रंगों के साथ खेलें

मध्य प्रदेश द्वारा द्वितीय क्षेत्रीय सम्मेलन
भोपाल, मध्य प्रदेश (12 - 13 सितंबर 2024) में तैयार किया गया

उद्देश्य

- संख्याओं को पढ़ना और लिखना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल/रंगीन पेन
- कटर/कैंची
- सेलोफेन शीट
- पैमाना (स्केल)
- रंगोली के रंग

बनाने की विधि

चित्र 1

चरण 1

- चित्र 1 में दिखाए अनुसार एक डिब्बा लें, उस पर चार्ट पेपर चिपकाएँ और उसे अलग-अलग हिस्सों में बाँटें जिन पर नाम दें – "संख्या", "अक्षर" और "रंगों के साथ अभ्यास"।

चित्र 2

चरण 2

गत्ते और चार्ट पेपर को वर्गाकार टुकड़ों में काटें, उन पर चार्ट पेपर चिपकाएँ और चित्र 2 में दिखाए अनुसार संख्याएँ लिखें।

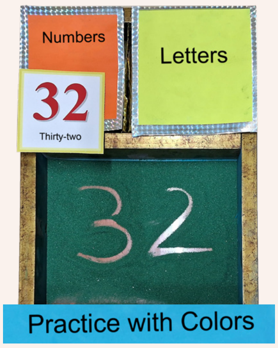

चित्र 3

चरण 3

- "रंगों के साथ अभ्यास" नामक हिस्से में रंगोली के रंग भरें, जैसा कि चित्र 3 में दिखाया गया हैltice with colours" as shown in the चित्र 3

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक इस गतिविधि की शुरुआत करते हुए शिक्षार्थियों से संख्याओं और अक्षरों पर चर्चा करके करेंगे, ताकि वे अपने दैनिक जीवन में गणितीय क्रियाओं और शब्द/वाक्य बनाने के महत्व को समझ सकें।
2. स्वयंसेवी शिक्षक किसी एक शिक्षार्थी से कहेंगे कि वह संख्या बॉक्स से कोई भी एक संख्या कार्ड निकाले।
3. दूसरे शिक्षार्थी से वह संख्या पहचानने और पढ़ने को कहा जाएगा।
4. संख्या पहचानने के बाद शिक्षार्थी उस संख्या को रंगोली के रंग पर लिखेगा।
5. संख्या पहचानने के बाद कठिनाई स्तर बढ़ाने हेतु जटिल संख्याओं का प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण – संख्या 58 चुनकर यह प्रश्न पूछा जा सकता है :
   - 58 के बाद कौन-सी संख्या आती है?
   - 58 से पहले कौन-सी संख्या आती है?
6. स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों से कह सकते हैं कि वे ऐसी संख्याएँ लिखें जिनमें '4' आता हो, जैसे – 14, 44, 54, 64 इत्यादि।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अपने दैनिक जीवन के संदर्भ में 1 से 10,000 तक की संख्याएँ पढ़ना और लिखना। (LO 1 – गणनात्मक ज्ञान

गतिविधि 12 : संख्याओं के साथ खेल

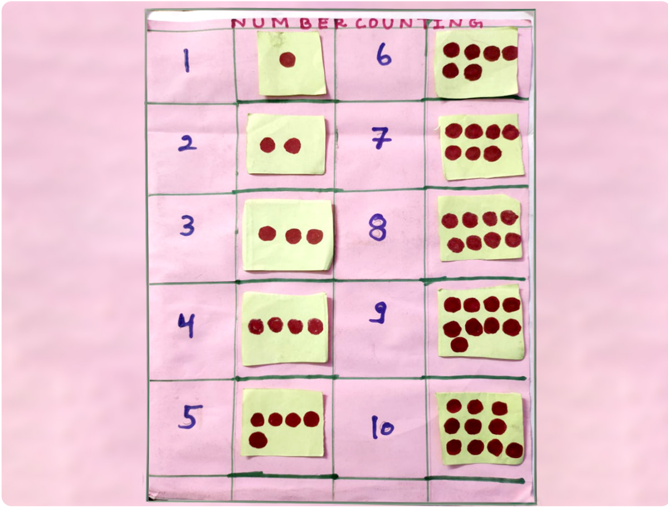

छत्तीसगढ़ द्वारा द्वितीय क्षेत्रीय सम्मेलन, भोपाल
मध्य प्रदेश (12 - 13 सितंबर 2024) में तैयार किया गया

उद्देश्य

- संख्याओं की पहचान करना, पढ़ना और उन्हें स्थानानुसार ढूँढना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल/रंगीन पेन
- पैमाना (स्केल)
- बिंदी स्टिकर
- फ़ेविकोल/फ़ेविस्टिक

बनाने की विधि

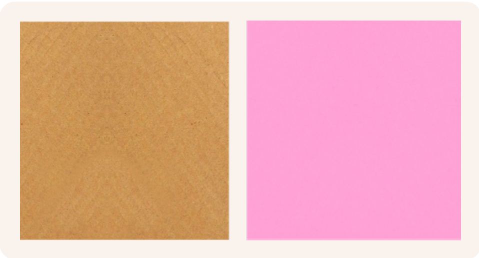

चित्र 1

चरण 1

- एक वर्गाकार चार्ट पेपर लें और उसे गत्ते पर चिपकाएँ।

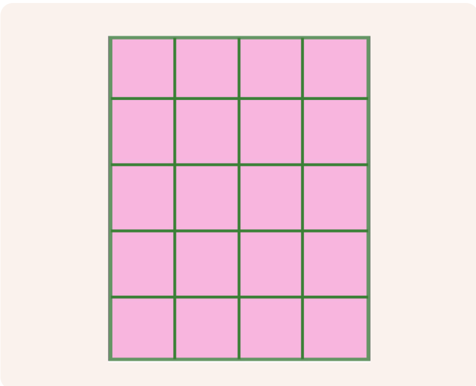

चित्र 2

चरण 2

- गत्ते पर चिपके चार्ट पेपर को चित्रानुसार चार कॉलम में विभाजित करें।

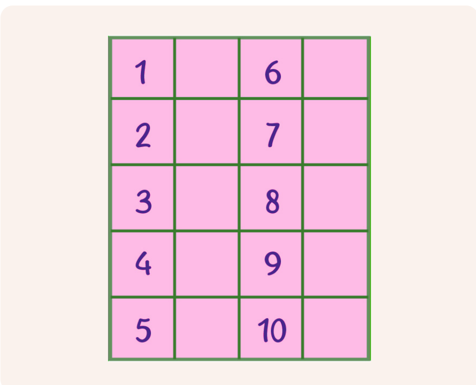

चित्र 3

चरण 3

- चित्रानुसार एक तरफ 1 से 5 तक और दूसरी तरफ 6 से 10 तक संख्याएँ लिखें।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक गतिविधि की शुरुआत करते हुए शिक्षार्थियों के साथ संख्याओं की अवधारणा पर चर्चा से करेंगे, जैसे- वे संख्याओं का कहाँ प्रयोग करते हैं?(दैनिक जीवन में इनका महत्व, बस का नंबर पहचानना, रेलवे टिकट पर सीट नंबर जानना, फ़ोन नंबर आदि)।
2. अब स्वयंसेवी शिक्षक किसी कॉलम में लिखी संख्या के बराबर उसके सामने खाली स्थान पर बिंदी स्टिकर चिपकाएँगे। (उदाहरण के लिए, 2 के सामने दो बिंदी चिपकाएँगे)
3. शिक्षार्थियों से कहा जाएगा कि वे आगे आकर संख्या गिनें और उतनी ही संख्या में बिंदियाँ अगले कॉलम में चिपकाएँ।
4. स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों को कह सकते हैं कि वे बिंदियाँ जोड़कर लिखी संख्या पूरी करें। (उदाहरण के लिए, यदि चार्ट पर 6 के सामने शिक्षक ने या किसी शिक्षार्थी ने दो बिंदी चिपका दी हैं, तो अगले शिक्षार्थी को वहाँ 4 और बिंदियाँ चिपकानी होंगी ताकि कुल 6 बिंदियाँ हो जाएँ)
5. कठिनाई स्तर बढ़ाने के लिए प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जैसे –
   - 5 से पहले कौन-सी संख्या आती है?
   - 8 के बाद कौन-सी संख्या आती है?
6. उनसे जोड़ और घटाव की बुनियादी संक्रियाएँ कराई जा सकती हैं, जैसे – 2 + 1 = 3, 9 – 5 = 4, और इनका अभ्यास लेखन-पुस्तिका में कराया जा सकता है।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अपने दैनिक जीवन के संदर्भ में 1 से 10,000 तक की संख्याएँ पढ़ना और लिखना। (LO 1 – गणनात्मक ज्ञान)
- दैनिक जीवन में बराबर (=), जोड़ (+), घटाव (–), गुणा (×) और भाग (÷) के चिह्नों की पहचान और प्रयोग करना। (LO 2 – गणनात्मक ज्ञान)
- अपने दैनिक जीवन के संदर्भ में जोड़, घटाव, गुणा और भाग की गणितीय क्रियाओं का प्रयोग करना। (LO 3 – गणनात्मक ज्ञान)

गतिविधि 13 : संख्या खेल

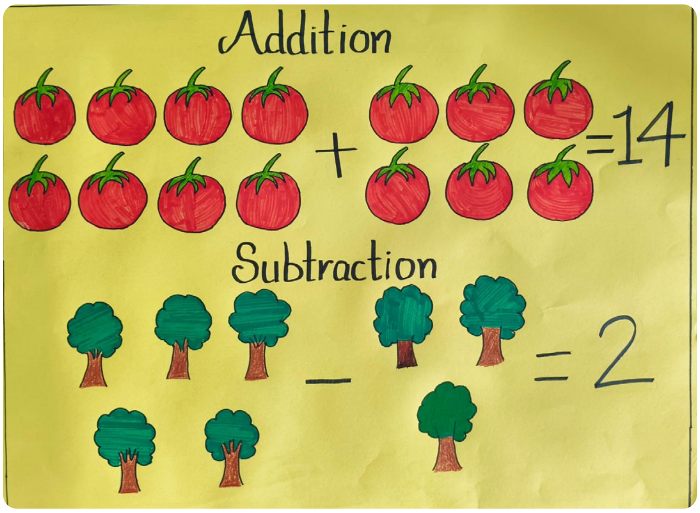

त्रिपुरा द्वारा तृतीय क्षेत्रीय सम्मेलन, गुवाहाटी
असम (22 - 23 अक्टूबर 2024) में तैयार किया गया

उद्देश्य

- गिनती, अंकों और जोड़-घटाव जैसी संख्यात्मक संक्रियाओं की समझ विकसित करना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल
- पैमाना (स्केल)
- सेलोटेप/फ़ेविकोल

बनाने की विधि

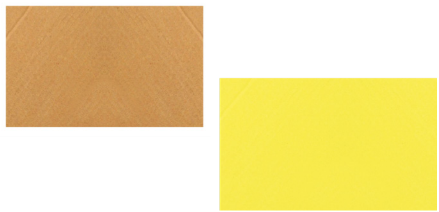

चित्र 1

चरण 1

- एक गत्ता लें और उस पर चार्ट पेपर चिपकाएँ (जैसा कि चित्र 1 में दर्शाया गया है)।

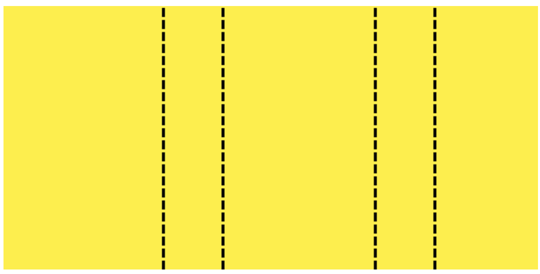

चित्र 2

चरण 2

- चित्र के अनुसार, चार्ट पेपर पर चार रेखाएँ खींचकर उसे चार हिस्सों में बाँटें – पहला हिस्सा वस्तुओं के लिए, दूसरा हिस्सा गणितीय चिह्नों (+, –) के लिए, तीसरा हिस्सा वस्तुओं को दर्शाने के लिए, और चौथा हिस्सा परिणाम लिखने के लिए।

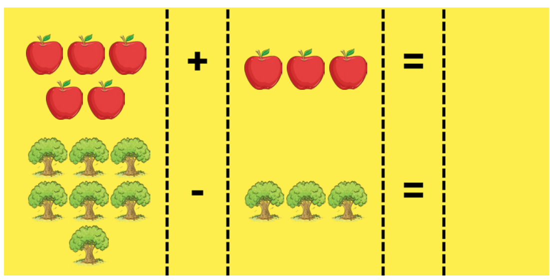

चित्र 3

चरण 3

- पहले और तीसरे हिस्से में वस्तुओं के चित्र बनाइए, बीच वाले हिस्से में जोड़ या घटाव का चिह्न लगाइए, और अंतिम हिस्से को उत्तर के लिए रिक्त रखें।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक गतिविधि की शुरुआत में शिक्षार्थियों से दिए गए जोड़ या घटाव को हल करने के लिए कहेंगे।

2. शिक्षक उन्हें बीच में बने चिह्न (+ या –) पर ध्यान दिलाएँगे और वस्तुओं को उसी के अनुसार गिनने के लिए प्रेरित करेंगे।
3. उदाहरण के लिए, यदि पहले खाने में 5 सेब और चिह्न (+) के बाद तीसरे खाने में 3 सेब रखे गए हों, तो उन्हें जोड़कर उत्तर 8 लिखने को कहा जाएगा।
4. कठिनाई स्तर बढ़ाने के लिए अधिक वस्तुएँ जोड़कर या घटाकर प्रश्न दिए जा सकते हैं।
5. शिक्षक शिक्षार्थियों से यह भी पूछ सकते हैं कि वे जोड़/घटाव करने के लिए कौन-कौन से तरीके इस्तेमाल कर रहे हैं।
6. गतिविधि को आगे बढ़ाने के लिए बीच के चिह्न बदलकर (जोड़ से घटाव, घटाव से जोड़ आदि) नए प्रश्न बनाए जा सकते हैं।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अपने दैनिक जीवन के संदर्भ में 1 से 10,000 तक की संख्याएँ पढ़ना और लिखना। (LO 1 – गणनात्मक ज्ञान)
- दैनिक जीवन में बराबर (=), जोड़ (+), घटाव (–), गुणा (×) और भाग (÷) के चिह्नों की पहचान और प्रयोग करना। (LO 2 – गणनात्मक ज्ञान)
- जोड़, घटाव, गुणा और भाग की गणितीय क्रियाओं का प्रयोग अपने दैनिक जीवन के संदर्भ में करना। (LO 3 – गणनात्मक ज्ञान)

गतिविधि 14 : पहले और बाद में

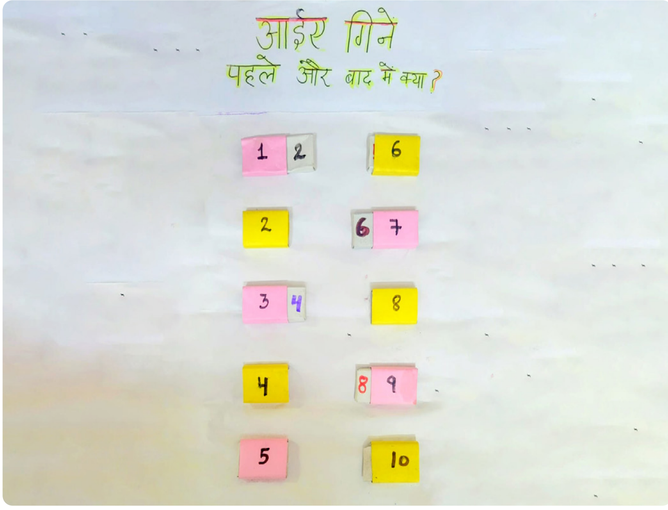

हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रथम क्षेत्रीय सम्मेलन
गुरुग्राम, हरियाणा (1 - 2 अगस्त 2024) में तैयार किया गया

उद्देश्य

- संख्याओं में "पहले" और "बाद में" की अवधारणा विकसित करना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल
- माचिस की डिब्बियाँ
- पैमाना (स्केल)
- कटर/कैंची
- सेलोटेप/फ़ेविकोल

बनाने की विधि

चित्र 1

चरण 1

- गत्ता शीट को आयताकार आकार में काटें।

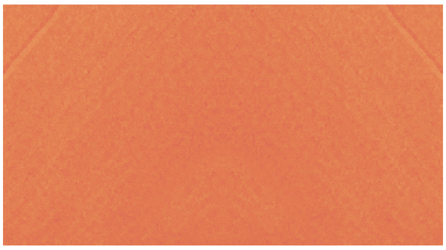

चित्र 2

चरण 2

- उस पर चार्ट पेपर चिपकाएँ।

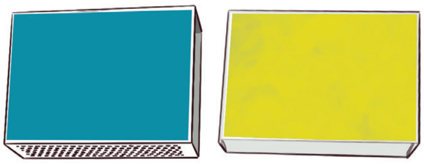

चित्र 3

चरण 3

- माचिस की डिब्बियाँ लें और उन पर अंदर और बाहर दोनों तरफ रंगीन कागज़ चिपकाएँ, जैसा कि चित्र 3 में दर्शाया गया है।

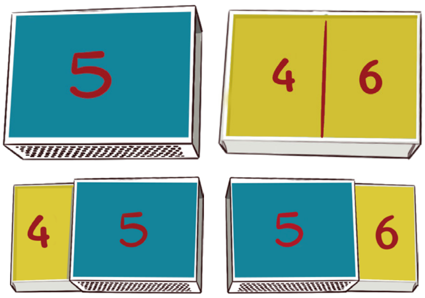

चित्र 4

चरण 4

- डिब्बी के बाहरी हिस्से पर 1 से 10 तक संख्याएँ लिखें। अंदरूनी हिस्से को दो भागों में बाँटें। इस पर बाईं ओर वह संख्या लिखें जो बाहर लिखी संख्या से पहले आती है, और दाईं ओर वह संख्या लिखें जो बाहर लिखी संख्या के बाद आती है। उदाहरण के लिए, यदि बाहरी हिस्से पर “5” लिखा है, तो अंदर बाईं ओर “4” और दाईं ओर “6” लिखा होगा।

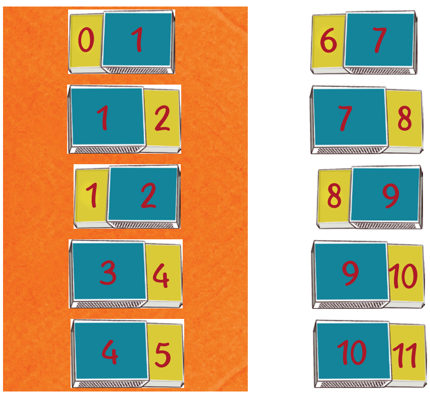

चित्र 5

चरण 5

- इन तैयार माचिस की डिब्बियों को गत्ते पर चिपकाएँ।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों से 1 से 20 तक गिनती सुनेंगे और किसी संख्या का नाम लेकर उनसे पूछेंगे कि उसके बाद और उसके पहले कौन-कौन सी संख्याएँ आती हैं। उदाहरण के लिए, उनसे पूछेंगे कि 5 से पहले कौन-सी संख्या आती है और 5 के बाद कौन-सी।
2. तैयार बोर्ड दिखाएँगे जिसमें माचिस की डिब्बियाँ लगी हों।
3. शिक्षार्थियों से कहा जाएगा कि वे किसी डिब्बी पर लिखी कोई संख्या पढ़ें और फिर डिब्बी के अन्दर वाले भाग को पहले बाएँ और फिर दाएँ खिसकाकर देखें कि उसपर लिखी संख्या से पहले और बाद में कौन-सी संख्या आती है।
4. सभी को बारी-बारी से इस खेल को खेलने और पहले आने वाली/ बाद में आने वाली संख्याओं को बताने का अवसर दिया जा सकता है।
5. शुरुआत छोटी संख्याओं (30 से 50 तक) से की जा सकती है और बाद में 90 तक और उससे आगे ले जाया जा सकता है।
6. इसी बोर्ड का उपयोग स्थानीय मान समझाने में भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि अंदर 7 और 6 लिखा हो और बाहर 8 लिखा हो तो शिक्षार्थी इसे 768 के रूप में पढ़ेंगे।
7. शिक्षार्थियों से तीन अंकों की संख्या पढ़ने और उसके स्थानीय मान (इकाई, दहाई, सैकड़ा) बताने को कहा जा सकता है।
8. शिक्षक डिब्बियों का प्रयोग करके उनसे स्थानीय मान पहचानने के लिए कह सकते हैं।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अपने दैनिक जीवन के संदर्भ में 1 से 10,000 तक की संख्याएँ पढ़ना और लिखना। (LO 1 – गणनात्मक ज्ञान)
- 1 से 999 तक की संख्याओं में इकाई, दहाई और सैकड़ा के स्थान-मूल्य को समझना और उपयोग करना। (LO 4 – गणनात्मक ज्ञान)

गतिविधि 15 : संख्या पट्टी

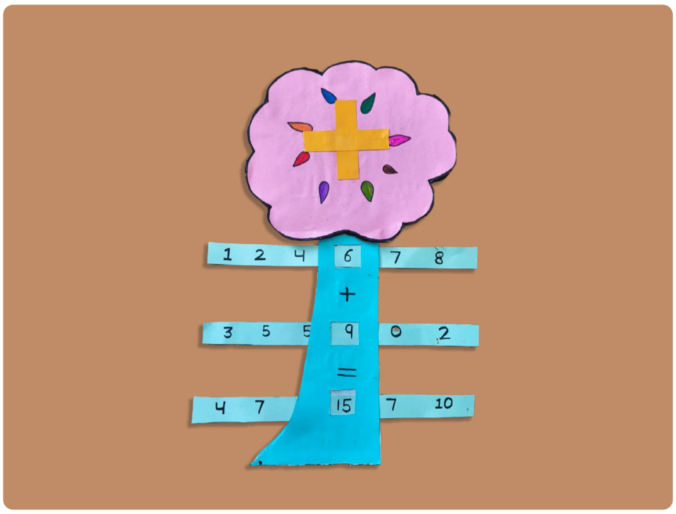

उत्तराखंड द्वारा प्रथम क्षेत्रीय सम्मेलन
गुरुग्राम, हरियाणा (1 - 2 अगस्त 2024) में तैयार किया गया

उद्देश्य

- जोड़, घटाव जैसी गणितीय संक्रियाओं की समझ विकसित करना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता (शीट)
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल
- कटर/कैंची
- सेलोटेप/फ़ेविकोल

बनाने की विधि

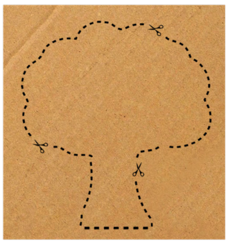

चित्र 1

चरण 1

- गत्ते की एक शीट लें और उसे पेड़ के आकार में काटें। (जैसा चित्र 1 में दर्शाया गया है)

चित्र 2

चरण 2

- उस पर एक रंगीन शीट चिपकाएँ।

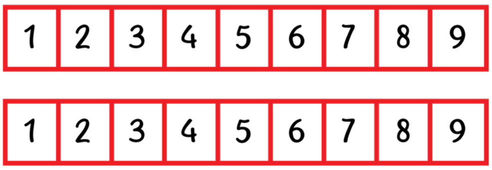

चित्र 3

चरण 3

- चार्ट पेपर की दो लंबी पट्टियाँ काटें और उन पर 1 से 9 तक की संख्याएँ क्रम से लिखें।

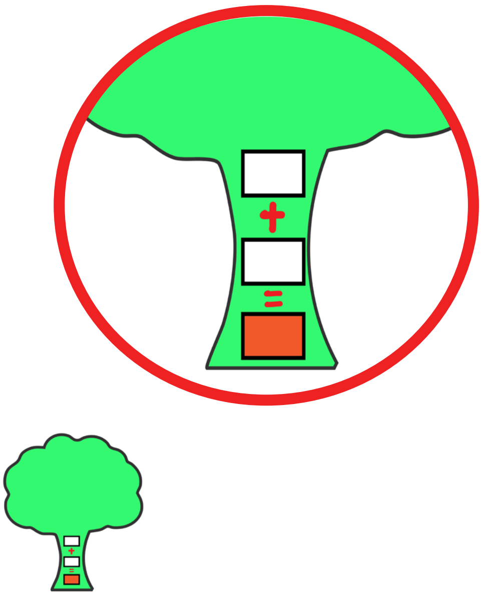

चित्र 4

चरण 4

- पेड़ के तने के कागज़ को चार स्थानों पर किसी धारदार वस्तु से थोड़ा-थोड़ा आड़ा इस प्रकार काट दें (दो कट बनाएँ), ताकि ये पट्टियाँ उसमें खिसक सकें। दोनों पट्टियों के बीच जोड़ (+), घटाव (–), गुणा (×) या भाग (÷) का चिह्न बनाएँ, और बराबर (=) का चिह्न भी लगाएँ। पेड़ के नीचे एक छोटा आयताकार पॉकेट अलग रंग के चार्ट पेपर से चिपकाएँ जिसमें शिक्षार्थी उत्तर लिखे हुए कार्ड रख सकें।

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक गतिविधि की शुरुआत संख्याओं से जुड़े प्रश्न पूछकर करेंगे, जैसे — "आप अपने दैनिक जीवन में कहाँ-कहाँ संख्याओं का प्रयोग करते हैं?" इस चर्चा के दौरान जोड़, घटाव आदि की अवधारणा लाई जाएगी।
2. शिक्षक शिक्षार्थियों से कहेंगे कि पट्टियों को खिसकाकर दो अलग-अलग संख्याएँ दिखाएँ।
3. फिर उनसे कहा जाएगा कि दिख रही संख्याओं और चिह्न के अनुसार गणना करें और उत्तर नीचे दिए पॉकेट में लिखकर रखें।
4. कठिनाई स्तर बढ़ाने के लिए एक तीसरी पट्टी भी जोड़ी जा सकती है।
5. जोड़ के स्थान पर अन्य गणितीय चिह्न (घटाव, गुणा, भाग) भी प्रयुक्त किए जा सकते हैं।
6. यही गतिविधि भाषा के लिए भी की जा सकती है — पट्टियों पर अक्षर लिखकर दो या तीन अक्षर वाले शब्द बनाए जा सकते हैं (जैसे : रथ, बस, नल, GO, BUS, TAP)।

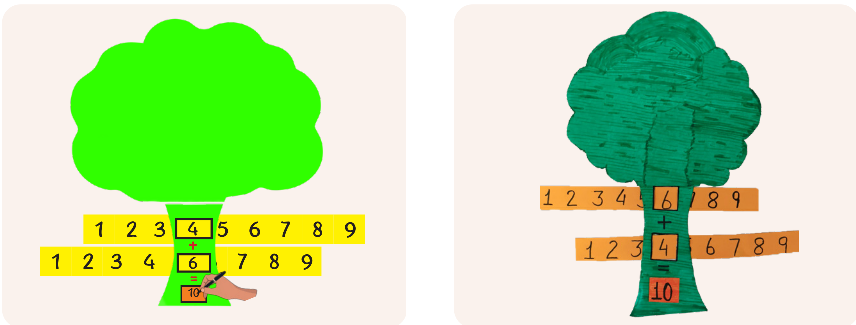

चित्र 5

शिक्षार्थी ने सीखा

- दैनिक जीवन में बराबर (=), जोड़ (+), घटाव (–), गुणा (×) और भाग (÷) के चिह्नों की पहचान और प्रयोग करना। (LO 2 – गणनात्मक ज्ञान)
- दैनिक जीवन के संदर्भ में जोड़, घटाव, गुणा और भाग की गणितीय क्रियाओं का प्रयोग करना। (LO 3 – गणनात्मक ज्ञान)
- 1 से 999 तक की संख्याओं में इकाई, दहाई और सैकड़ा के स्थान-मूल्य को समझना और उपयोग करना। (LO 4 – गणनात्मक ज्ञान)

गतिविधि 16 : चलो गिनें और संख्याएँ सीखें

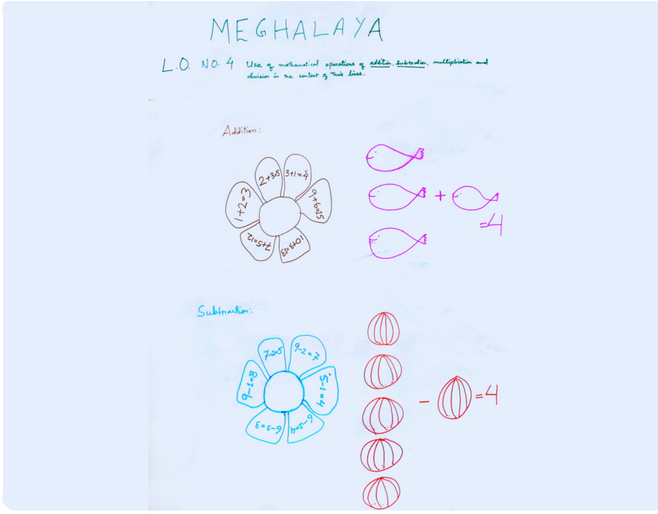

मेघालय द्वारा तृतीय क्षेत्रीय सम्मेलन,
गुवाहाटी, असम (22 - 23 अक्टूबर 2024) में तैयार किया गया

उद्देश्य

- संख्याओं की पहचान को बढ़ाना
- जोड़-घटाव जैसी सरल गणितीय संक्रियाओं की समझ को मजबूत करना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता (शीट)
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल
- पैमाना (स्केल)
- कटर/कैंची
- सेलोटेप/फ़ेविकोल

बनाने की विधि

चित्र 1

चरण 1

- गत्ते की एक शीट लें और उस पर चार्ट पेपर चिपकाएँ। .

चरण 2

- चार्ट पेपर पर किनारे (हाशिया) बनाएँ और फूलों के बड़े- बड़े 3- 4 चित्र बनाइए जिनकी बड़ी-बड़ी पंखुड़ियाँ हों।

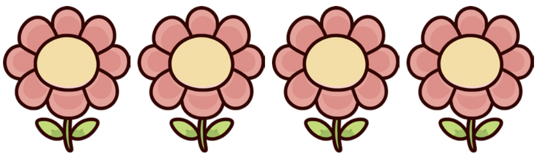

चित्र 2

चरण 3

- प्रत्येक पंखुड़ी पर जोड़ के प्रश्न लिखें।

  उदाहरण : 2 + 3, 10 + 3 आदि।

चरण 4

- इसी प्रकार घटाव, गुणा और भाग के प्रश्न भी लिखें।

  उदाहरण : 9 – 1 = ___, 6 ÷ 2 = ___।

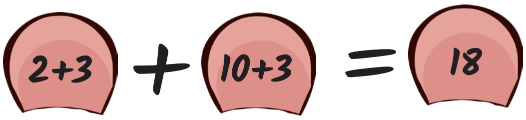

चित्र 3

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक एक-एक पंखुड़ी एक-एक शिक्षार्थी को सौंपेंगे और उनसे उसे ध्यान से देखने को कहेंगे।
2. शिक्षार्थी पंखुड़ी पर लिखा प्रश्न हल करेंगे और उत्तर उसी पंखुड़ी पर दिए गए स्थान में लिखेंगे।
3. शिक्षक उन्हें अपने मन से और प्रश्न बनाने (जोड़, घटाव आदि) के लिए प्रेरित करेंगे।
4. शिक्षक यह भी चर्चा कर सकते हैं कि वे जोड़/घटाव करने के लिए कौन-सी विधि अपना रहे हैं।
5. कठिनाई स्तर बढ़ाने के लिए शिक्षार्थियों को गुणा और भाग के प्रश्न भी हल करने को कहा जा सकता है।
6. शिक्षक शिक्षार्थियों से दी गई संख्याओं का स्थानीय मान (इकाई, दहाई, सैकड़ा) पहचानने के लिए भी कह सकते हैं।

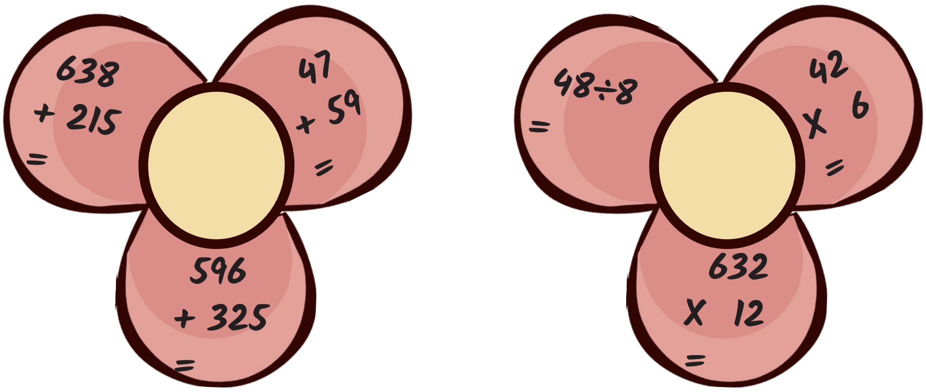

चित्र 4

शिक्षार्थी ने सीखा

- दैनिक जीवन में बराबर (=), जोड़ (+), घटाव (–), गुणा (×) और भाग (÷) के चिह्नों की पहचान और प्रयोग करना। (LO 2 – गणनात्मक ज्ञान)
- 1 से 999 तक की संख्याओं में इकाई, दहाई और सैकड़ा के स्थान-मूल्य को समझना और प्रयोग करना। (LO 4 – गणनात्मक ज्ञान)
- दैनिक जीवन के संदर्भ में जोड़, घटाव, गुणा और भाग की गणितीय क्रियाओं का प्रयोग करना। (LO 3 – गणनात्मक ज्ञान)

गतिविधि 17 : पासों के साथ संख्या मज़ा

महाराष्ट्र द्वारा द्वितीय क्षेत्रीय सम्मेलन
भोपाल, मध्य प्रदेश (12 - 13 सितंबर 2024) में तैयार किया गया

उद्देश्य

- संख्याओं वाले पासे (Number Dice) की मदद से संख्याओं की पहचान करना।
- गणनात्मक कौशल (Arithmetic Skills) विकसित करना।

आवश्यक सामग्री

- गत्ता
- चार्ट पेपर/रंगीन शीट
- मार्कर पेन/पेंसिल
- पैमाना (स्केल)
- कटर/कैंची
- सेलोटेप/फ़ेविकोल

बनाने की विधि

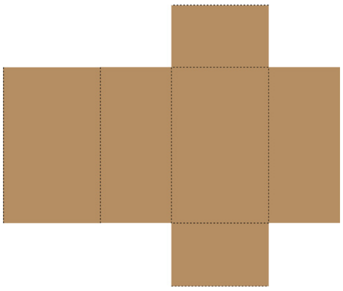

चित्र 1

चरण 1

- गत्ते या पोस्टकार्ड के आकार का मोटा कागज़ लें और चित्र 1 की तरह के बराबर आकार के छह वर्ग काटें। (चित्र 1)

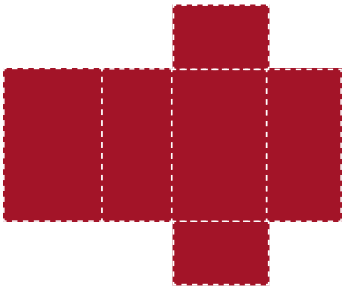

चित्र 2

चरण 2

- इस आकृति के सामने की ओर रंगीन कागज़ चिपका दें। (चित्र 2)

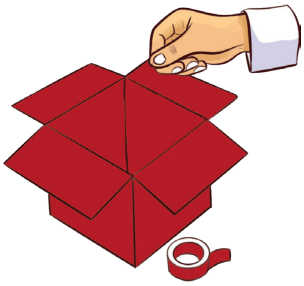

चित्र 3

चरण 3

- सभी वर्गों को जोड़कर एक घन या पासे का आकार बनाएँ। . (चित्र 3)

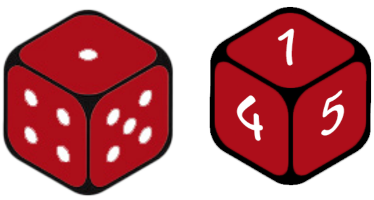

चित्र 4

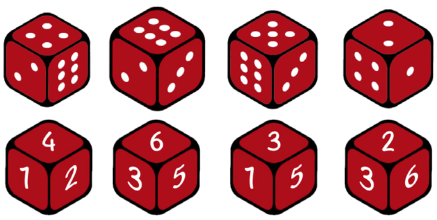

चित्र 5

चरण 4

- पासे के हर फलक पर बड़े आकार में संख्या लिखें — एक तरफ अंक (1, 2, 3 आदि) और दूसरी तरफ बिंदुओं के रूप में। (चित्र 4, चित्र 5)

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक पासा शिक्षार्थियों को देंगे और उनसे उस पर प्रदर्शित संख्या पहचानने को कहेंगे (अंक और बिंदु — दोनों रूपों में)।
2. शिक्षक अंक वाला पासा दिखाएँगे और शिक्षार्थियों से कहेंगे कि वे उसी अंक के अनुरूप बिंदु वाला पासा ढूँढें और मिलाएँ।
3. गतिविधि को बढ़ाते हुए शिक्षक कह सकते हैं कि पासा दो बार फेंको और आए दोनों अंकों को जोड़ो।
4. शिक्षक किसी शिक्षार्थी को कोई संख्या (6 से बड़ी) बताएँगे और कहेंगे कि पासा फेंको और जो अंक आए उसे दी गई संख्या में जोड़ो या घटाओ।
5. कठिनाई स्तर बढ़ाने के लिए प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जैसे :
   - "इससे पहले कौन-सी संख्या आती है?" (उदाहरण : 8 से पहले 7)
   - "इसके बाद कौन-सी संख्या आती है?" (उदाहरण : 8 के बाद 9)
6. इसी प्रकार पासों का प्रयोग अक्षरों की पहचान के लिए भी किया जा सकता है।
7. यदि दो या अधिक पासे बनाए जाएँ तो उनसे शब्द बनाए जा सकते हैं। उदाहरण : छ, त ⟶ "छत"।
8. क्षेत्रीय भाषा के अक्षर लिखकर भी पासे से शब्द बनाए जा सकते हैं।

चित्र 6

शिक्षार्थी ने सीखा

- दैनिक जीवन में बराबर (=), जोड़ (+), घटाव (–), गुणा (×) और भाग (÷) के चिह्नों की पहचान और प्रयोग करना। (LO 2 – गणनात्मक ज्ञान)
- दैनिक जीवन के संदर्भ में जोड़, घटाव, गुणा और भाग की गणितीय क्रियाओं का प्रयोग करना। (LO 3 – गणनात्मक ज्ञान)

गतिविधि 18 : गणित का जादू

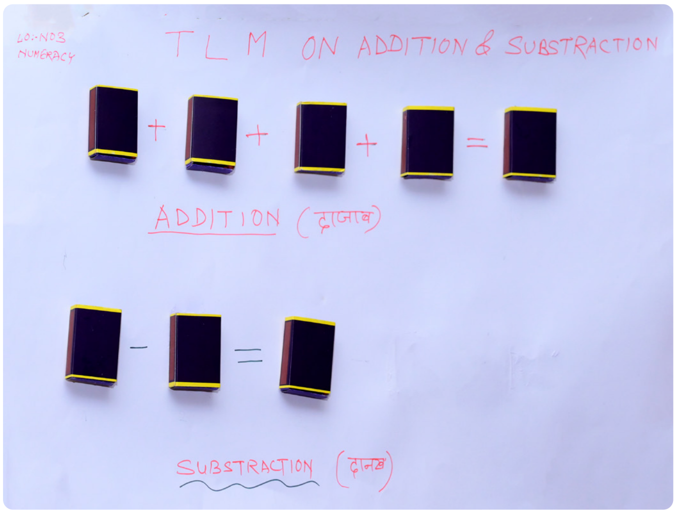

असम द्वारा तृतीय क्षेत्रीय सम्मेलन
गुवाहाटी, असम (22 - 23 अक्टूबर 2024) में तैयार किया गया

उद्देश्य

- माचिस की तीलियों की मदद से जोड़ और घटाव की अवधारणा समझना।
- स्थानीय मान की अवधारणा स्पष्ट करना।

आवश्यक सामग्री

- माचिस की तीलियाँ (कम से कम 20–30)
- खाली माचिस की डिब्बियाँ (5–10)
- मार्कर पेन/पेंसिल
- छोटा बोर्ड/कागज़

बनाने की विधि

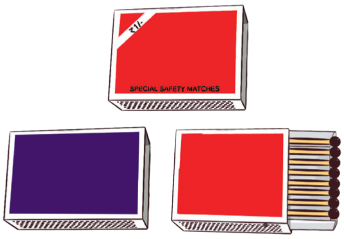

चित्र 1

चरण 1

- माचिस की तीलियाँ और खाली डिब्बियाँ इकट्ठी करें। आवश्यक हो तो डिब्बियों को साफ़ करें। (चित्र 1)

चित्र 2

चरण 2

- माचिस की डिब्बियों पर रंगीन कागज़ चिपका दें। हर डिब्बी पर संख्या (1, 2, 3 आदि) लिखें। (चित्र 2)

चित्र 3

चरण 3

- प्रत्येक डिब्बी में उतनी तीलियाँ डालें जितनी संख्या उस पर लिखी है। उदाहरण : "3" लिखी डिब्बी में 3 तीलियाँ। (चित्र 3)

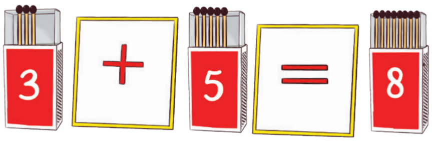

चित्र 4

चरण 4

- जोड़-घटाव की प्रक्रिया समझाने के लिए छोटे बोर्ड/कागज़ का प्रयोग करें। (चित्र 4)

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक शुरुआत में शिक्षार्थियों को डिब्बियाँ दिखाएँगे।
2. शिक्षक शिक्षार्थी से कहेंगे कि वह दो डिब्बियाँ चुने — जैसे मान लीजिए एक पर "2" लिखा है और दूसरी पर "3"।
3. शिक्षार्थी दोनों डिब्बियाँ खोलकर तीलियाँ अलग-अलग गिनेंगे।
4. फिर सभी तीलियों को मिलाकर कुल संख्या गिनेंगे।

5. कठिनाई स्तर बढ़ाने के लिए शिक्षक दो अंकों वाले प्रश्न भी लिख सकते हैं, जैसे 43 + 51 = ?

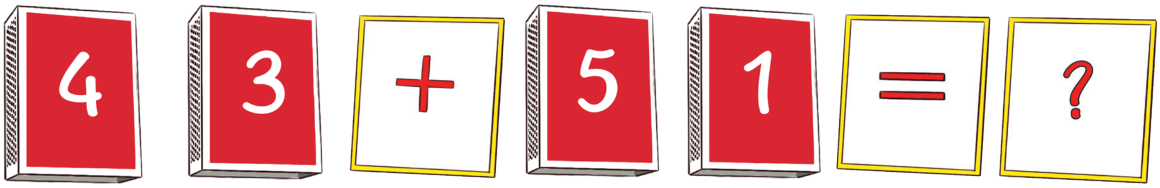

चित्र 5

6. बार-बार अलग-अलग संख्याओं से यही गतिविधि कराई जा सकती है ताकि समझ पक्की हो।
7. और चुनौतीपूर्ण बनाने के लिए शिक्षक बंडलों का प्रयोग करा सकते हैं — शिक्षार्थियों से 10 तीलियाँ गिनने को कहें और उन्हें रबर-बैंड से बाँधकर बताएँ कि यह बण्डल एक 'दहाई' को प्रदर्शित करता है, जबकि खुली तीलियाँ "इकाई" दर्शाएँगी।

शिक्षार्थी ने सीखा

- अपने दैनिक जीवन के संदर्भ में 1 से 10,000 तक की संख्याएँ पढ़ना और लिखना। (LO 1 – गणनात्मक ज्ञान)
- दैनिक जीवन में बराबर (=), जोड़ (+), घटाव (–), गुणा (×) और भाग (÷) के चिह्नों की पहचान और प्रयोग करना। (LO 2 – गणनात्मक ज्ञान)
- दैनिक जीवन के संदर्भ में जोड़, घटाव, गुणा और भाग की गणितीय क्रियाओं का प्रयोग करना। (LO 3 – गणनात्मक ज्ञान)
- 1 से 999 तक की संख्याओं में इकाई, दहाई और सैकड़ा के स्थान-मूल्य को समझना और प्रयोग करना। (LO 4 – गणनात्मक ज्ञान)

गतिविधि 19 : संख्याओं के खेल

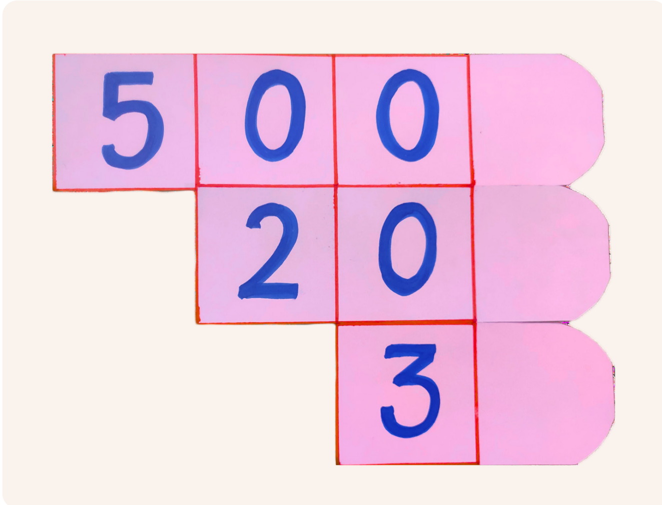

पुदुच्चेरी द्वारा चतुर्थ क्षेत्रीय सम्मेलन, हैदराबाद
तेलंगाना (17 - 18 फरवरी 2025) में तैयार किया गया

उद्देश्य

- स्थानीय मान की अवधारणा को समझना।

आवश्यक सामग्री

- फ़ाइल बोर्ड
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल/रंगीन पेन
- कटर/कैंची
- सेलोफेन शीट (प्लास्टिक)
- पैमाना (स्केल)

बनाने की विधि

चरण 1

- चार्ट पेपर को चित्र 1 में दिए गए आकारों में काटें।

चित्र 1

चरण 2

- एक कार्ड इस प्रकार बनाएँ कि उसमें एक "अंक बॉक्स" और एक "होल्डिंग एरिया" हो।
- अंक बॉक्स में कोई भी संख्या लिखें, जैसे 1, 2, 3... (चित्र 2)

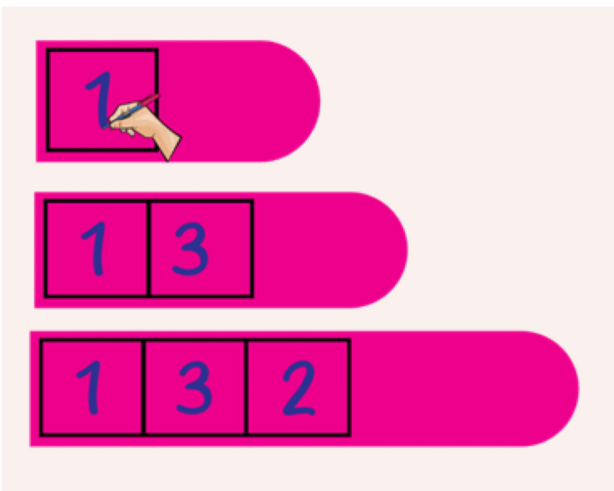

चित्र 2

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक शिक्षार्थियों से स्थानीय मान की अवधारणा पर चर्चा करेंगे।
2. शिक्षक संख्या कार्डों का उपयोग करके समझाएँगे। उदाहरण : संख्या 358 दिखाकर पूछें — “इसमें 5 का स्थानीय मान क्या है?”
3. शिक्षक कार्डों की स्थिति बदलकर 2 अंकों और 3 अंकों की नई संख्याएँ बनाएँगे।
4. शिक्षार्थियों से कहा जाएगा कि वे दी गई संख्याओं में अंकों का स्थानीय मान पहचानें, जैसे 79, 65, 231, 456।
5. शिक्षक स्थान-मूल्य के वास्तविक जीवन उदाहरण देंगे, जैसे :
   - राशि/रुपए पैसे : ₹5 और ₹50 में अंतर।
   - फ़ोन नंबर : अंकों की स्थिति समझना।
   - माप : दूरी, वजन आदि पढ़ना।

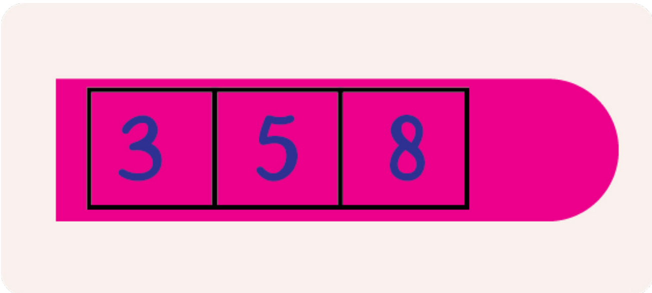

चित्र 3

शिक्षार्थी ने सीखा

- अपने दैनिक जीवन के संदर्भ में 1 से 10,000 तक की संख्याएँ पढ़ना और लिखना। (LO 1 – गणनात्मक ज्ञान)
- 1 से 999 तक की संख्याओं में इकाई, दहाई और सैकड़ा के स्थान-मूल्य को समझना और प्रयोग करना। (LO 4 – गणनात्मक ज्ञान)

गतिविधि 20 : सही समय क्या है?

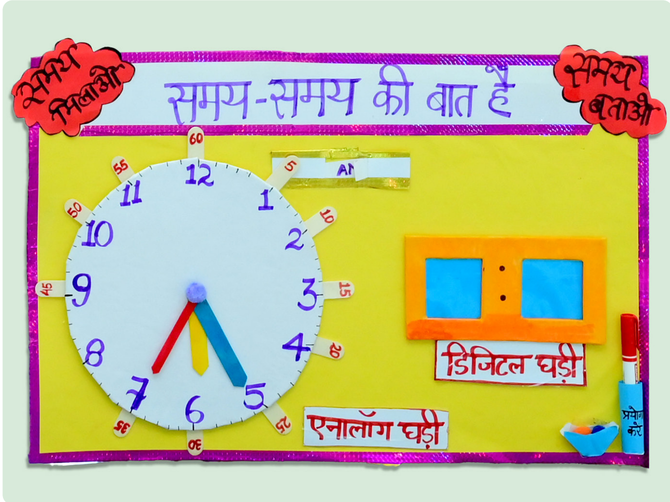

तमिलनाडु द्वारा चतुर्थ क्षेत्रीय सम्मेलन
हैदराबाद, तेलंगाना (17 - 18 फरवरी 2025) में तैयार किया गया

उद्देश्य

- • घड़ी एनालाग और डिजिटल पर समय पढ़ना।
- • समय को 24-घंटे वाले प्रारूप से 12-घंटे वाले प्रारूप में और इसके विपरीत बदलना।

आवश्यक सामग्री

- हार्डबोर्ड/गत्ता शीट
- चार्ट पेपर (सफेद/रंगीन)
- मार्कर पेन/पेंसिल/रंगीन पेन
- वॉटर कलर्स
- पैमाना (स्केल)
- कटर/कैंची
- सेलोफेन शीट (प्लास्टिक)
- सेलोटेप/फ़ेविकोल/फ़ेविस्टिक
- आइसक्रीम स्टिक
- डस्टर/ रूई
- कंगन/थाली/प्लेट (वृत्त बनाने के लिए)

बनाने की विधि

चित्र 1

चरण 1

- गत्ता और चार्ट पेपर को बराबर आकार के आयताकार टुकड़ों में काटें। (चित्र 1)

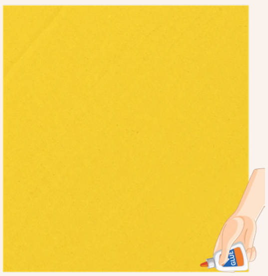

चित्र 2

चरण 2

- चार्ट पेपर को गत्ते पर चिपकाएँ। (चित्र 2)

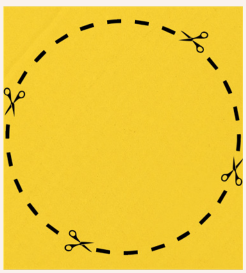

चित्र 3

चरण 3

- चार्ट पेपर पर एक वृत्त बनाएँ और काटें। (चित्र 3)

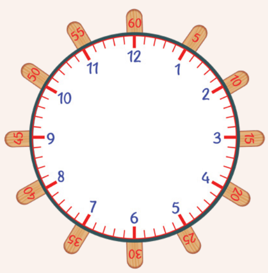

चित्र 4

चरण 4

- 1 से 12 तक की संख्याएँ क्रम से लिखकर एक घड़ी तैयार करें। (चित्र 4)

बनाने की विधि

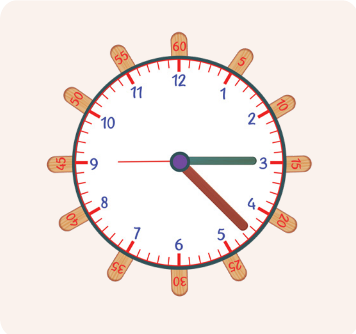

चित्र 5

चरण 5

- आइसक्रीम स्टिक को अलग-अलग लंबाई में काटें और उन्हें घंटे, मिनट और सेकंड की सुई के रूप में बीच में लगाएँ। इन्हें ऐसे लगाएँ कि आसानी से घूम सकें। (चित्र 5)

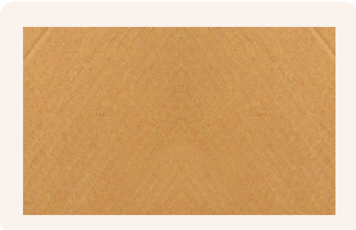

चित्र 6

चरण 6

- गत्ते का एक आयताकार टुकड़ा (2 इंच × 6 इंच) काटें। (चित्र 6)

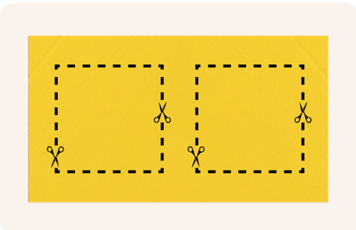

चित्र 7

चरण 7

- चार्ट पेपर का वर्गाकार टुकड़ा (2 इंच × 2 इंच) काटकर उस पर चिपकाएँ। (चित्र 7)

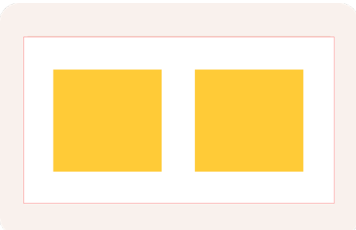

चित्र 7

चरण 8

- बीच में AM और PM दर्शाने के लिए स्लाइडिंग पॉकेट लगाएँ। (चित्र 7)

चरण 9

- Analog Clock और Digital Clock दोनों को बोर्ड पर जोड़ें और उसे सेलोफेन शीट से ढकें। (चित्र 8)

चित्र 8

उपयोग की विधि

1. स्वयंसेवी शिक्षक गतिविधि के प्रारंभ में समय से जुड़े प्रश्न पूछेंगे —
   - आप कितने बजे उठते हैं?
   - काम पर कब जाते हैं?
   - दोपहर का भोजन कब करते हैं?
2. शिक्षार्थियों के उत्तर को Analog Clock पर दिखाएँगे।
3. घंटे, मिनट और सेकंड की सुई तथा उनके कार्य समझाएँगे।
4. शिक्षार्थियों से कहेंगे कि वे निर्देशानुसार समय घड़ी पर सेट करें। (चित्र 12, 13)
5. अब डिजिटल घड़ी का परिचय देंगे और दिखाएँगे कि समय अंकों (1, 2, 3 आदि) में कैसे लिखा जाता है।
6. शिक्षार्थियों से कहेंगे कि वे सामान्य घड़ी में दिखाए गए समय को डिजिटल प्रारूप में लिखें। (चित्र 14, 15)
7. शिक्षक कभी सामान्य घड़ी (एनालाग घड़ी) पर समय सेट करेंगे और कभी डिजिटल घड़ी पर, और शिक्षार्थियों से इसे बदलने को कहेंगे।
8. गतिविधि को और रोचक बनाने के लिए, एक टीम सामान्य घड़ी (एनालाग घड़ी) पर समय सेट करेगी और दूसरी टीम उसे डिजिटल घड़ी में लिखेगी।

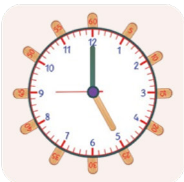
चित्र 9

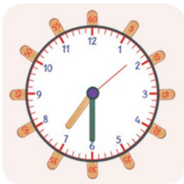
चित्र 10

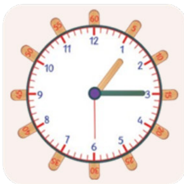
चित्र 11

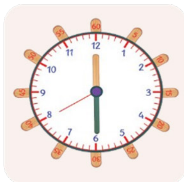
चित्र 12

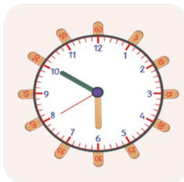
चित्र 13

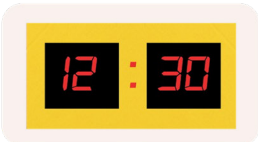

चित्र 14

चित्र 15

शिक्षार्थी ने सीखा

- एनालाग घड़ी और Digital Clock पर घंटे, मिनट और सेकंड के रूप में समय पढ़ना तथा सुबह, दोपहर, शाम और रात के संदर्भ में बताना। (LO 12 – गणनात्मक ज्ञान)
- घंटे, मिनट और सेकंड के बीच संबंध को समझना। (LO 13 – गणनात्मक ज्ञान)
- समय को 24-घंटे वाले प्रारूप से 12-घंटे वाले प्रारूप में और इसके विपरीत बदलना। (LO 14 – गणनात्मक ज्ञान)

परिशिष्ट 1

सीखने के प्रतिफल

बुनियादी साक्षरता (भाषा)

शिक्षार्थी :

1. अक्षरों को अलग-अलग और शब्द में पहचानते हैं।
2. अक्षर ध्वनि को अक्षर के आकार से जोड़ते हैं।
3. स्वरों और उनसे संबंधित मात्राओं की पहचान करते हैं।
4. पढ़ने और लिखने की दो-तरफ़ा प्रक्रिया में एक-साथ भाग लेते हैं —
   - अक्षर से पूरे पाठ तक जाते हैं,
   - और पूरे पाठ से अक्षर तक आते हैं।
5. दैनिक जीवन की विभिन्न संदर्भ स्थितियों/थीम के आधार पर पढ़ने और लिखने की खोजबीन करते हैं।
6. एक से अधिक तरीकों से शब्द पढ़ते हैं —
   - ध्वनि जोड़कर,
   - पूरे शब्द की पहचान करके,
   - चित्र या संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाकर।
7. किसी अक्षर या ध्वनि से शुरू होने वाले, किसी विशेष अक्षर या ध्वनि पर समाप्त होने वाले शब्दों की सूची बनाते हैं।
8. अक्षर, शब्द और छोटी-छोटी पाठ्य-सामग्री को पठनीय लिखावट में लिखते हैं।
9. भाषा/ पाठ्य-सामग्री में बार-बार प्रयोग होने वाले शब्दों की पहचान करते हैं।
10. अपने वातावरण में उपलब्ध छपी हुई/लिखी हुई पाठ्य-सामग्री को पढ़ते हैं और उसे अपने जीवन अनुभवों/स्थितियों से जोड़ते हैं।
11. सामान्य वस्तुओं के चित्रों को अपनी भाषा या प्रवेशिका की भाषा में नामांकित (लेबल) करते हैं।
12. सहारे से पाठ्य-सामग्री पढ़ ते हैं और धीरे-धीरे स्वतंत्र रूप से पढ़ते हैं।
13. पाठ्य-सामग्री के आधार पर प्रश्नों के मौखिक/लिखित उत्तर देते हैं (उचित प्रतिक्रिया देते हैं, राय व्यक्त करते हैं, कारण बताते हैं)।
14. पाठ्य-सामग्री या थीम से संबंधित वार्तालाप में भाग लेकर गहराई से समझ विकसित करते हैं।

परिशिष्ट 2

सीखने के प्रतिफल

आधारभूत गणनात्मक ज्ञान

शिक्षार्थी :

1. अपने दैनिक जीवन के संदर्भ में 1 से 10,000 तक की संख्याएँ पढ़ते और लिखते हैं।
2. अपने दैनिक जीवन में बराबर (=), जोड़ (+), घटाव (–), गुणा (×) और भाग (÷) के चिन्हों की पहचान करते हैं और प्रयोग करते हैं।
3. जोड़, घटाव, गुणा और भाग की गणितीय क्रियाओं का प्रयोग अपने दैनिक जीवन में करते हैं।
4. 1 से 999 तक की संख्याओं में इकाई, दहाई और सैकड़ा के स्थान-मूल्य को समझते हैं और प्रयोग करते हैं।
5. ₹1, ₹2, ₹5, ₹10, ₹20, ₹50, ₹100, ₹200 और ₹500 के नोट/सिक्कों की पहचान करते हैं और लेन-देन में प्रयोग करते हैं।
6. वस्तुओं का मूल्य उनकी मात्रा और कीमत के अनुसार निकालते हैं और लेन-देन करते हैं।
7. वस्तुओं, स्थानों आदि को बराबर हिस्सों में बाँटते हैं और आधा, चौथाई तथा तीन-चौथाई हिस्से पहचानते हैं।
8. आधा, चौथाई और तीन-चौथाई को भिन्न (Fractions) के रूप में लिखते हैं।
9. द्वि-आयामी आकृतियाँ (त्रिभुज, वर्ग, वृत्त) और त्रि-आयामी आकृतियाँ (गोला, बेलन, शंकु, घन, घनाभ) तथा उनकी विशेषताओं की पहचान करते हैं और उनका प्रयोग करते हैं।
10. आकारों और संख्याओं के पैटर्न पहचानते हैं, बनाते हैं और उनका विस्तार करते हैं।
11. लंबाई, भार और आयतन/क्षमता को असमान और मानक मात्रकों में नापते हैं और मात्रकों के बीच संबंध समझाते हैं।
12. घड़ी (Analog और Digital) पर घंटे, मिनट और सेकंड के रूप में समय पढ़ते हैं और सुबह, दोपहर, शाम, रात के संदर्भ में बताते हैं।
13. घंटे, मिनट और सेकंड के बीच संबंध समझाते हैं।
14. समय को 24-घंटे वाले प्रारूप से 12-घंटे वाले प्रारूप में और इसके विपरीत बदलते हैं।
15. सप्ताह के दिन, वर्ष के महीने और अपने जीवन से जुड़े विशेष अवसरों के दिन (कैलेंडर के माध्यम से) पहचानते हैं।

उल्लास
ULLAS
जन जन साक्षर
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम

Regional Conferences at a Glance

01 – 02 August 2024 - Gurugram, Haryana

Participating States/UTs developing & showcasing their LTM

उल्लास
ULLAS
जन जन साक्षर
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम

Bhopal, Madhya Pradesh

12 – 13 September 2024

Participating States/UTs developing & showcasing their LTM

उल्लास
ULLAS
जन जन साक्षर
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम

Guwahati, Assam

22 – 23 October 2024

Participating States/UTs developing & showcasing their LTM

उल्लास
ULLAS
जन जन साक्षर
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम

Hyderabad, Telangana

17 – 18 February 2025

Participating States/UTs developing & showcasing their LTM

उल्लास
ULLAS
जन जन साक्षर
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research & Training